भगवान शिव विशेषांक

वर्ष : ४ अंक : ५
०७ मार्च, २०२४

RNI-UPHIN/2021/79954

पंद्रह रुपए

खुले दिमाग़ के खुले विचार

ओपन डोर

राष्ट्रीय साप्ताहिक समाचार-पत्र

भगवान शिव के फायकू

भगवान शिव आए है
फायकू लाए है
तुम्हारे लिए

भगवान शिव के फायकू

A Complete Dulha Collection

NIMMY collection

All Branded Readymade Cloths Available

Raymond Siyaram's Grasim

Shanni Khan
7500359311

Mohd. Saqib
8433211867

हर प्रकार के कोट-पेंट,
शेरवानी, इंडोवेस्टर्न, जवाहरकट,
जोधपुरी सूट, डिजाइनर सूट,
कुर्ता-पाजामा आदि उपलब्ध है।

Lahoti Market, Shop No. A/1, Station Road, Najibabad

संपादकीय

भगवान शिव सभी में हैं और सभी भगवान शिव में स्थित हैं

आज भारत ही नहीं बल्कि दुनिया भर में हिंदु त्योहारों को मनाए जाने का प्रचलन बढ़ा है। अच्छा लगा जब कुछ मुस्लिम मित्रों ने भी महाशिवरात्रि की शुभकामनाएं भेजीं। ठीक वैसे ही जैसे हम ईद की मुबारकबाद पेश करते हैं। महाशिवरात्रि का सनातनियों में विशेष धार्मिक महत्व है। यह पावन पर्व बड़ी ही श्रद्धा और उल्लास के साथ फाल्गुन के महीने में मनाया जाता है। ऋग वेद, शिव पुराण और विष्णु पुराण में इसका विशेष वर्णन मिलता है। माना जाता है कि सृष्टि के प्रारंभ में इसी दिन मध्यरात्रि को भगवान शंकर का ब्रह्मा से रौद्र रूप में अवतरण हुआ था। प्रलय की बेला में इसी दिन प्रदोष के समय भगवान शिव ने तांडव करते हुए ब्रह्मांड को अपने तीसरे नेत्र की ज्वाला से भस्म कर दिया था। इसलिए इसे महाशिवरात्रि अथवा कालरात्रि कहा जाता है। शिव अमंगल रूप होने पर भी भक्तों का मंगल करते हैं और श्री संपत्ति प्रदान करते हैं। एक कहानी इस प्रकार है- एक बार पार्वतीजी ने भगवान शिव से पूछा- ऐसा कौन सा श्रेष्ठ व सरल पूजन है, जिससे मृत्युलोक के प्राणी आपकी कृपा सहज ही प्राप्त कर लेते हैं। इसके जवाब में शिवजी ने महाशिवरात्रि का महत्व बताते हुए पार्वतीजी को एक कथा सुनायी-'एक गांव में एक शिकारी रहता था। पशुओं की हत्या करके वह अपने परिवार का भरण-पोषण करता था। वह एक साहूकार का ऋणी था। एक दिन साहूकार ने शिकारी को शिवमठ में बंदी बना लिया। संयोग से उस दिन शिवरात्रि थी। शिवमठ में शिकारी ने शिवरात्रि की कथा सुनी।' शाम के समय साहूकार ने उसे इस शर्त पर छोड़ दिया कि वह कल तक उसका पैसा वापस कर देगा। दिनभर भूखा प्यासा वह जंगल में शिकार करने निकला तो एक तालाब के किनारे बेल वृक्ष पर चढ़कर शिकार का इंतजार करने लगा। बेल वृक्ष के नीचे शिवलिंग था। बेलवृक्ष पर चढ़ते समय जो बेल पत्र टूटकर नीचे गिरे वह शिवलिंग पर चढ़ गये। एक पहर रात्रि बीत जाने पर एक गर्भिणी मृगी तालाब पर पानी पीने आयी। शिकारी ने उसे मारना चाहा तो वह अपने गर्भिणी होने की दुहाई देकर उसने अपने प्राणों की भीख मांगी। शिकारी ने उसे जाने दिया। इसी तरह उसने दो और हिरणों को जाने दिया। रात्रि का आखिरी पहर चल रहा था, लेकिन उसने किसी भी मृग को नहीं मारा। उसने उस रात कोई शिकार नहीं किया। उपवास, रात्रि जागरण तथा शिवलिंग पर बेल पत्र चढ़ने से शिकारी का हिंसक हृदय निर्मल हो गया था। वह अपने अतीत के कर्मों को याद करके पश्चाताप करने लगा। शिकारी ने अपने कठोर हृदय को जीव हिंसा से हटकर सदा के लिए दयालु बना लिया। अंत में शिकारी को मोक्ष प्राप्त हुआ।

भारत में १२ प्रसिद्ध शिवलिंग हैं, जिनमें काशी और उज्जैन के ज्योर्तिलिंग का विशेष महत्व है। भगवान शिव का निवास स्थान कैलाश पर्वत माना जाता है, लेकिन शिव समस्त जगत में विचरण करते रहते हैं। अगर वह कैलाश पर्वत पर विचरण करते हैं, तो श्मशान में भी धूनी रमाते हैं। हिमालय पर उनके विचरण करने की मान्यता के कारण ही उत्तराखंड के नगरों और गांवों में शिव के हजारों मंदिर हैं। धार्मिक मान्यता है कि शिवरात्रि को शिव जगत में विचरण करते हैं। शिवरात्रि के दिन शिव का का वृत रखने और उनका दर्शन करने से हजारों जन्मों का पाप मिट जाता है और मोक्ष की प्राप्ति होती है।

यूं तो हर दिन पवित्र होता है मगर आज का दिन भगवान आशुतोश को न सिर्फ स्मरण करने का दिन है बल्कि उनके द्वारा स्थापित किए गए आदर्शों को समझने और उन पर चलने का दिन है। भगवान शिव को भोला भी कहा जाता है। समुद्र मंथन में निकला विष जब किसी ने धारण नहीं किया तब इन्हीं भगवान शिव ने उसे अपने कंठ में धारण किया और नीलकंठ कहलाए। जीव-जंतुओं से इतना स्नेह कि विषधर इनके गले की शोभ बनते हैं, भस्मीभूत भगवान शिव मृगछाला पहनकर सृष्टि के लिए सबकुछ त्यागने का माद्दा उत्पन्न करते हैं, सोने की लंका राक्षसराज रावण को दे दी तो उसकी तपस्या से प्रसन्न होकर अनेक वर भी दिए। लिखने के लिए शब्द कम हैं और गाथा बहुत विशाल है। थोड़े में बस यह समझ लेना ही काफी है कि भगवान शिव सभी में हैं और सभी भगवान शिव में स्थित हैं। इसीलिए तो कहा गया है-

सत्यं, शिवं, सुन्दरं!

सभी को शिवरात्रि पर हार्दिक शुभकामनाएं!

अमन कुमार

खुले दिमाग के खुले विचार
ओपन डोर
राष्ट्रीय साप्ताहिक समाचार-पत्र

मूल्य पंद्रह रुपए

वर्ष : ४, अंक : ०४, ०७ मार्च, २०२४

संपादकीय कार्यालय- साई एंक्लेव, निकट धनौरा देवता, नजीबाबाद- २४६७६३ बिजनौर (उप्र)

सदस्यता प्राप्त करें

एक साल १००० रु., दो साल १६०० रु., पांच साल ४८०० रु. अंक की हार्ड कॉपी न मिल पाने की दशा में पीडीएफ मिलेगी

वैधानिक-समाचार-पत्र में प्रकाशित किसी भी सामग्री से संपादक का सहमत होना आवश्यक नहीं है। किसी भी लेख/समाचार/ कविता/ कहानी/विज्ञापन आदि के लिए लेखक स्वयं जिम्मेदार होगा। विवाद की स्थिति में न्यायक्षेत्र नजीबाबाद होगा। सभी पद अवैतनिक

MSME-UDYAM-UP-17-0002703

स्वामी, मुद्रक, प्रकाशक अमन कुमार द्वारा आशीष प्रिंटर्स, मोहल्ला मकबरा, नजीबाबाद से मुद्रित तथा ए-७, आदर्श नगर, तातारपुर लालू, नजीबाबाद- २४६७६३ जिला बिजनौर (उ.प्र.) से प्रकाशित।
संपादक-अमन कुमार
मोबाईल नं.- 9897742814
E-Mail- opendoornbd@gmail.com
RNI-UPHIN/2021/79954

खुलकर सांस ले रहा है 'जम्मू-कश्मीर'

कश्मीर में अनुच्छेद ३७० हटने के बाद पहली यात्रा में प्रधान मंत्री नरेंद्र मोदी ने श्रीनगर के बख्शी स्टेडियम में 'विकसित भारत विकसित जम्मू कश्मीर' कार्यक्रम के दौरान ६,४०० करोड़ रुपये से अधिक की अनेक विकास परियोजनाओं का अनावरण किया।

इस मैदान से पीएम ने विपक्ष पर जमकर निशाना भी साधा। उन्होंने कहा, आज जम्मू-कश्मीर विकास की नई ऊंचाइयों को छू रहा है, क्योंकि जम्मू-कश्मीर आज खुलकर सांस ले रहा है। बन्दिशों से ये आजादी आर्टिकल ३७० हटने के बाद आई है। उन्होंने कहा कि दशकों तक सियासी फायदे के लिए कांग्रेस और उसके साथियों ने ३७० के नाम पर जम्मू कश्मीर के लोगों को गुमराह किया, देश को गुमराह किया।

मोदी ने कहा कि ३७० से फायदा जम्मू कश्मीर को था या कुछ राजनीतिक परिवार ही इसका लाभ उठा रहे थे। जम्मू कश्मीर की आवाम ये सच्चाई जान चुकी है कि उनको गुमराह किया गया था। कुछ परिवारों के फायदे के लिए जम्मू कश्मीर को जंजीरों में जकड़ दिया गया था। उन्होंने कहा कि आज ३७० नहीं है, इसलिए जम्मू कश्मीर के युवाओं की प्रतिभा का पूरा सम्मान हो रहा है, उन्हें नए अवसर मिल रहे हैं। आज यहां सबके लिए समान अधिकार भी हैं, समान अवसर भी हैं।

नरेंद्र मोदी ने कहा कि यहां की झीलों में जगह-जगह कमल देखने को मिलते हैं। ५० साल पहले बने जम्मू कश्मीर क्रिकेट एशोसिएशन के लोगो में भी कमल है। ये सुखद संयोग है या कुदरत का कोई इशारा कि भाजपा का चिन्ह भी कमल है और कमल के साथ तो जम्मू कश्मीर का गहरा नाता है। उन्होंने कहा कि जब इरादे नेक हों, संकल्प को सिद्ध करने का जज्बा हो तो फिर नतीजे भी मिलते हैं। पूरी दुनिया ने देखा कि कैसे यहां जम्मू कश्मीर में जी२० का शानदार आयोजन हुआ।

जम्मू कश्मीर में पर्यटन के सारे रिकॉर्ड टूट रहे हैं। अकेले २०२३ में ही २ करोड़ से ज्यादा पर्यटक यहां आए हैं।

भगवान शिव का महान चरित्र

अमन कुमार त्यागी

प्रत्येक वर्ष फाल्गुन मास की कृष्ण पक्ष की चतुर्दशी को महाशिवरात्रि का त्योहार मनाया जाता है। शिव को एक ओर प्रलय का कारक माना जाता है, जबकि दूसरी ओर उन्हें भोला भी कहा जाता है। बेल और भांग के प्रसाद से प्रसन्न होने वाले भगवान शिव प्रकृति प्रेमी ही जान पड़ते हैं। जब शिव और पार्वती का विवाह हुआ तब वह मुनि और असुरों के साथ बारात लेकर गए थे, जिससे शिव अच्छे और बुरे दोनों ही तरह के लोगों को समान समझते प्रतीत होते हैं। बेल और

शिवपुराण में वर्णित है कि शिवजी के निराकार स्वरूप का प्रतीक 'लिंग' इसी पावन तिथि की महानिशा में प्रकट होकर सर्वप्रथम ब्रह्मा और विष्णु के द्वारा पूजित हुआ था. इसी कारण यह तिथि 'शिवरात्रि' के नाम से विख्यात हो गई। यह दिन माता पार्वती और शिवजी के विवाह की तिथि के रूप में भी पूजा जाता है। माना जाता है जो भक्त शिवरात्रि को दिन-रात निराहार एवं जितेंद्रिय होकर अपनी पूर्ण शक्ति व सामर्थ्य द्वारा निश्छल भाव से शिवजी की यथोचित पूजा करता है, वह वर्ष पर्यंत शिव-पूजन करने का संपूर्ण फल मात्र शिवरात्रि को तत्काल प्राप्त कर लेता है।

भांग से प्रसन्न होने वाले शिव संदेश देते हैं कि उन्हें भी साथ लेकर चलो जिनका सभ्य समाज कोई महत्व नहीं समझता। अर्थात् शिव सबका कल्याण करने वाले हैं।

शिव को सबसे अधिक क्रोधी कहा जाता है किन्तु यह सत्य नहीं है। बेलपत्र, आक, धतूरे के पुष्प आदि से प्रसन्न हो जाने वाले शिव भला क्रोधी कैसे हो सकते हैं। हाँ, चूंकि शिव अनुशासन प्रिय हैं तो वह दूसरों से भी अनुशासन चाहते हैं। प्रकृति प्रेमी होने के कारण शिव अनुशासन की महत्ता को सर्वाधिक जानते हैं। इसलिये जो लोग अनुशासित नहीं हैं, शिव उन्हीं के प्रति क्रोध का प्रदर्शन करते हैं। यही कारण है कि शिव की आराधना करने वाले उन्हें प्रसन्न करने के लिए भांग और धतूरा चढ़ाते हैं। इस दिन मिट्टी के बर्तन में पानी भरकर, ऊपर से बेलपत्र, आक धतूरे के पुष्प, चावल आदि डालकर 'शिवलिंग' पर चढ़ाया जाता है। वास्तव में शिव भोले हैं। आप भी शिव के सन्देश को अपनाएं आपका यह प्रयास भगवान शिव को प्रसन्न कर देंगे। शिव का अर्थ ही है कल्याण।

शिव को संहारक, महेश, भोलेनाथ, रुद्र अनेकों नाम से पुकारा जाता है। ब्रह्माजी सृष्टि के निर्माता हैं तो विष्णुजी पालन-पोषण करने वाले हैं। शिव भगवान संहार करने का कार्य करते हैं, इस कारण उन्हें संहारक भी कहा जाता है। भगवान शिव देवताओं के भी देव हैं, इसीलिए उन्हें महेश कहा गया है। भगवान शिव अपने भक्तों की जरा सी भक्ति से ही प्रसन्न हो जाने के कारण भोलेनाथ कहलाने लगे। भगवान शिव के रौद्र रुप के कारण उन्हें रुद्र के नाम से भी पुकारा जाने लगा। भगवान शिव के रुद्र नाम का सबसे पहले उल्लेख ऋग्वेद में मिलता है। भोलेनाथ व्यक्ति की चेतना के अन्तर्यामी हैं। भोलेनाथ की अर्धांगिनी का नाम पार्वती है। इन्हें शक्ति भी कहा गया है। इनके पुत्रों का नाम कार्तिकेय तथा गणेश पुत्री अशोक सुन्दरी है।

अब दूसरी तरह से बात करें। भगवान शिव को संहारक कहा जाता है, जबकि भगवान विष्णु को रक्षक और प्रजापति ब्रह्मा को सृष्टि का रचियता। किन्तु भगवान शिव के चरित्र का अध्ययन करने के बाद ज्ञात होता है कि भगवान शिव संहारक नहीं हैं। वह तो अपनी सृष्टि से अथाह प्रेम करने वाले विशाल सागर हैं। भगवान शिव तो स्वयं विष पीकर दूसरों को अमृत देते हैं। स्वयं जंगल में रहकर दूसरों को महल दे देते हैं। उन्हें कितना प्रेम देवताओं से है, उतना ही राक्षसों से भी। जितना प्रेम वह मनुष्य से करते हैं, उतना ही पशु और पक्षियों से भी। वह नारी से भी उतना ही प्रेम करते हैं जितना कि स्वयं से परन्तु उनमें आसक्ति कहीं नहीं है। वह न्यायप्रिय और कठोर अनुशासन में जीने वाले हैं। वह भूत और भविष्य को वर्तमान के आगे झुठलाते नहीं। वह समाज निर्माण करते हैं, सृष्टि को बचाते हैं और जब आवश्यक हो जाता है तो क्रोध भी करते हैं। शिव सत्य हैं, व्यवहारिक हैं और कठिनाईयों को जानकर गले लगाना और फिर उनसे छुटकारा पाना भगवान शिव के चरित्र में ही सम्भव है।

महाशिवरात्रि का महत्व

शिवपुराण में वर्णित है कि शिवजी के निराकार स्वरूप का प्रतीक 'लिंग' इसी पावन तिथि की महानिशा में प्रकट होकर सर्वप्रथम ब्रह्मा और विष्णु के द्वारा पूजित हुआ था. इसी कारण यह तिथि 'शिवरात्रि' के नाम से विख्यात हो गई। यह दिन माता पार्वती और शिवजी के विवाह की तिथि के रूप में भी पूजा जाता है। माना जाता है जो भक्त शिवरात्रि को दिन-रात निराहार एवं जितेंद्रिय होकर अपनी पूर्ण शक्ति व सामर्थ्य द्वारा निश्छल भाव से शिवजी की यथोचित पूजा करता है, वह वर्ष पर्यंत शिव-पूजन करने का संपूर्ण फल मात्र शिवरात्रि को तत्काल प्राप्त कर लेता है।

सम्पूर्ण ब्रह्माण्ड का शिव ध्यानस्थ स्वरूप हैं। सम्पूर्ण ब्रह्माण्ड में सिर्फ शिव ही व्याप्त हैं। यह ब्रह्माण्ड के प्रत्येक अणु में व्याप्त हैं। इनका कोई आकार या रूप नहीं हैं परन्तु यह सभी आकार या रूप में मौजूद हैं और करुणा से परिपूर्ण हैं। लिंग का अर्थ चिन्ह होता हैं और इस तरह इसका प्रयोग स्त्रीलिंग और पुल्लिंग के रूप में होने लगा। सम्पूर्ण चेतना की पहचान लिंग के रूप में होती है। तमिल भाषा में एक कहावत हैं ''अंबे शिवन, शिवन अंबे'' जिसका अर्थ है शिव प्रेम हैं और प्रेम ही शिव है,सम्पूर्ण सृष्टि की आत्मा को ईश या शिव कहते हैं ।

श्रद्धालु इस दिन रजस और तमस को संतुलन में लाने के लिए और सत्व (वह मौलिक गुण जिससे कृत्य सफल होते हैं) में बढ़ोत्तरी करने के लिए उपवास करते हैं । ओ३म नमः शिवाय मंत्रोचारण की गूँज निरंतर होती रहती हैं। मंत्र उच्चारण वातावरण, मन और शरीर में पंच महाभूतों का संतुलन बनाता है। संसार जिस भोलेभाव और बुद्धिमत्ता की शुभ लय से चलता है वह शिव है। वे उर्जा के स्थिर और अनंत स्त्रोत्र हैं, वे स्वयं की अनंत अवस्था हैं, शिव सृष्टि के हर कण में समाएं हैं।

यूँ तो शिवरात्रि प्रतिमाह आती है। परंतु फाल्गुन कृष्ण चतुर्दशी को ही महाशिवरात्रि कहा गया है। ज्योतिषीय गणना के अनुसार सूर्य देव भी इस समय तक उत्तरायण में आ चुके होते हैं तथा ऋतु परिवर्तन का यह समय अत्यन्त शुभ होता है। ऋतु परिवर्तन की तरह आप भी अपने को परिवर्तन के लिये तैयार कर लीजिए। महाशिवरात्रि पर सरल उपाय करने से ही इच्छित सुख की प्राप्ति हो जायेगी।

संक्षेप में यही कहूँगा- शिव सम्पूर्ण हैं, उनके चरित्र में सृष्टि या सभ्यता के महान सूत्र छिपे हैं। शिव को आदर्श मानकर और उनके दर्शन को आत्मसात करने वाला कोई भी व्यक्ति न तो दुःखी हो सकता है और न ही असुन्दर। शिव स्वयं सत्य भी हैं और सुन्दर भी। इसीलिये तो कहा जाता है- सत्यं शिवं सुन्दरम!

ओ३म नमः शिवाय

शिव के अन्य नाम

भगवान शिव सबके पिता और भगवती पार्वती जगजननी तथा जगदम्बा कहलाती हैं। अपनी संतान पर उनकी असीम करुणा और कृपा है। उनका नाम ही आशुतोष है। दानी और उदार ऐसे हैं कि नाम ही पड़ गया औढ़रदानी। उनका भोलापन भक्तों को बहुत ही भाता है। अकारण अनुग्रह करना, अपनी संतान से प्रेम करना भोलेबाबा का स्वभाव है। उनके समान कल्याणकारी व प्रजा रक्षक और कौन हो सकता है।

समुद्र से कालकूट विष निकला जिसकी ज्वालाओं से तीनों लोकों में सर्वत्र हाहाकार मच गया। सभी प्राणी काल के जाल में जाने लगे, किसी में ऐसा सामर्थ्य नहीं था कि वह कालकूट विष का शमन कर सके। प्रजा की रक्षा का दायित्व प्रजापतिगणों का था, पर वे भी जब असमर्थ हो गए तो सभी शंकरजी की शरण में गए और अपना दुख निवेदन किया।

शिव के तीन प्रमुख नाम- शिव, शंभु और शंकर स्वामी अवधूतानंद के अनुसार- भगवान शंकर ही सबसे बड़े नीतिज्ञ है क्योंकि वे ही समस्त विधाओं, वेदादि शास्त्रों, आगमों तथा कलाओं के मूल स्रोत है। इसलिए उन्हें विशुद्ध विज्ञानमय, विश्वपति तथा समस्त प्राणियों का ईश्वर कहा गया है। भगवान शिव ही समस्त प्राणियों के अंतिम विश्रामस्थान भी है। उनकी संहारिका शक्ति प्राणियों के कल्याण के लिए प्रस्फुटित होती है। जब भी जिसके द्वारा धर्म का विरोध और नीति मार्ग का उल्लंघन होता है, तब कल्याणकारी शिव उसे सन्मार्ग प्रदान करते हैं। भगवान शिव और उनका नाम समस्त मंगलों का मूल एवं अमंगलों का उल्मूलक है। शिव, शंभु और शंकर, ये तीन नाम उनके मुख्य हैं और तीनों का अर्थ है- परम कल्याण की जन्मभूमि, संपूर्ण रूप से कल्याणमय, मंगलमय और परम शांतिमय।

भगवान शिव सबके पिता और भगवती पार्वती जगजननी तथा जगदम्बा कहलाती हैं। अपनी संतान पर उनकी असीम करुणा और कृपा है। उनका नाम ही आशुतोष है। दानी और उदार ऐसे हैं कि नाम ही पड़ गया औढ़रदानी। उनका भोलापन भक्तों को बहुत ही भाता है। अकारण अनुग्रह करना, अपनी संतान से प्रेम करना भोलेबाबा का स्वभाव है। उनके समान कल्याणकारी व प्रजा रक्षक और कौन हो सकता है।

समुद्र से कालकूट विष निकला जिसकी ज्वालाओं से तीनों लोकों में सर्वत्र हाहाकार मच गया। सभी प्राणी काल के जाल में जाने लगे, किसी में ऐसा सामर्थ्य नहीं था कि वह कालकूट विष का शमन कर सके। प्रजा की रक्षा का दायित्व प्रजापतिगणों का था, पर वे भी जब असमर्थ हो गए तो सभी शंकरजी की शरण में गए और अपना दुख निवेदन किया। उस समय भगवान शंकर ने देवी पार्वती से जो बात कही, उससे बड़ी कल्याणकारी, शिक्षाप्रद, अनुकरणीय नीति और क्या हो सकती है। विष से आर्त और पीड़ित जीवों को देखकर भगवान बोले- 'देवि! ये बेचारे प्राणी बड़े ही व्याकुल हैं। ये प्राण बचाने की इच्छा से मेरे पास आए हैं। मेरा कर्तव्य है कि मैं इन्हें अभय करूं क्योंकि जो समर्थ हैं, उनकी सामर्थ्य का उद्देश्य ही यह है कि वे दोनों का पालन करें।

साधुजन, नीतिमान जन अपने क्षणभंगुर जीवन की बलि देकर भी प्राणियों की रक्षा करते हैं। कल्याणी! जो पुरुष प्राणियों पर कृपा करता है, उससे सर्वात्मा श्री हरि संतुष्ट होते हैं और जिस पर वे श्री हरि संतुष्ट हो जाते हैं, उससे मैं तथा समस्त चराचर जगत भी संतुष्ट हो जाता है।' भगवान शिव स्वयं नीतिस्वरूप हैं। अपनी चर्चा से उन्होंने जीव को थोड़ा भी परिग्रह न करने, ऐश्वर्य एवं वैभव से विरक्त रहने, संतोष, संयम, साधुता, सादगी, सच्चाई परहित-चिंतन, अपने कर्तव्य के पालन तथा सतत्नाम जप-परायण रहने का पाठ पढ़ाया है। ये सभी उनकी आदर्श अनुपालनीय नीतियां हैं।

अपने प्राणों की बलि देकर भी जीवों की रक्षा करना, सदा उनके हित चिंतन में संलग्न रहना- इससे बड़ी नीति और क्या हो सकती है। कृपालु शिव ने यह सब कर दिखाया। 'मेरी प्रजाओं का हित हो इसलिए मैं इस विष को पी जाता हूँ।' ऐसा कह वे हलाहल पी गए और नीलकंठ कहलाए। तीनों लोकों की रक्षा हुई। भगवान शिव को अनेकों नामों से पुकारा जाता है. सभी नामों का अपना महत्व है।

रुद्र - इसका अर्थ है जो दुःखों का निर्माण तथा नाश दोनों ही करता है।

पशुपतिनाथ - इसका अर्थ है भगवान शिव पशु तथा पक्षियों और जीवात्माओं के स्वामी हैं।

अर्धनारीश्वर - भगवान शिव का यह नाम शिव तथा शक्ति के मिलने से प्रचलित हुआ।

महादेव - इसका अर्थ है ईश्वर की महान शक्ति।

भोले - भगवान शिव का हृदय कोमल है। वह दयालु हैं तथा बहुत जल्द प्रसन्न होकर सभी को क्षमा कर देते हैं। इसलिए इन्हें भोले कहा गया है।

लिंगम - इसका अर्थ रोशनी की लौ है तथा यह शब्द समस्त ब्रह्मांड का प्रतीक है।

नटराज - इसका अर्थ है नृत्य के देवता. भगवान शिव तांडव नृत्य के प्रेमी हैं इसलिए इन्हें नटराज भी कहा जाता है। नट अर्थात् नाचने वाला।

महाभक्ति का पर्व : महाशिवरात्रि

पं. खानचन्द शर्मा

भारत पर्वों का देश है। पर्व हमारी भक्ति पर निर्भर होते हैं। महाशिवरात्रि भी इनमें से एक है. भगवान शिव और माता पार्वती के विवाह के उपलक्ष्य में मनाया जाने वाला यह त्यौहार हमारी संस्कृति का मुख्य भाग है।

शिवरात्रि वह रात्रि है जिसका शिवतत्त्व से घनिष्ठ सम्बंध है। भगवान शिव की अतिप्रिय रात्रि को शिव रात्रि कहा जाता है। शिव पुराण के ईशान संहिता में बताया गया है कि फाल्गुन कृष्ण चतुर्दशी की रात्रि में आदिदेव भगवान शिव करोड़ों सूर्यों के समान प्रभाव वाले लिंग रूप में प्रकट हुए-

फाल्गुनकृष्णचतुर्दश्यामादिदेवो महानिशि।
शिवलिंगतयोद्भूतः कोटिसूर्यसमप्रभः।।

ज्योतिष के अनुसार फाल्गुन कृष्ण चतुर्दशी तिथि में चन्द्रमा सूर्य के समीप होता है। अतः इसी समय जीवन रूपी चन्द्रमा का शिवरूपी सूर्य के साथ योग मिलन होता है। अतः इस चतुर्दशी को शिवपूजा करने से अभीष्ट फल की प्राप्ति होती है। काम, क्रोध, लोभ, मोह, अहंकार आदि विकारों से मुक्ति पाकर सुख, शान्ति व ऐश्वर्य की प्राप्ति होती है। शिव का अर्थ है कल्याण, शिव सबका कल्याण करने वाले हैं. महाशिवरात्रि शिव की प्रिय तिथि है, शिवरात्रि शिव और शक्ति के मिलन का महापर्व है। फाल्गुन कृष्ण चतुर्दशी को शिवरात्रि पर्व मनाया जाता है। माना जाता है कि सृष्टि के प्रारंभ में इसी दिन मध्यरात्रि भगवान शंकर का ब्रह्मा से रुद्र के रूप में अवतरण हुआ था।

योगियों तथा विद्वानों का मानना है कि शिवरात्रि महाप्रकृति की मिलन अवस्था है। माना जाता है कि महाप्रकृति अर्थात् कुंडलिनी योग के १३ स्तर हैं, महाशिवरात्रि के अवसर पर तारामंडल के योग से आकाश में तारों का ऐसा संग्रह हो जाता है, जिसे कुंडलिनी योग कहा जाता है। यह योग मोक्ष प्राप्ति के लिए अत्यंत शुभ माना जाता है। सभी गृहस्थ आश्रमवाले पुरुष व योगी शिव को पुरुष व पार्वती को प्रकृति मान कर योग-साधना करते हैं।

पानी से भरे कलश में डाले हुए अखरोट शिव दर्शन के प्रतीक हैं। क्योंकि हर अखरोट में चार गिरियाँ होती हैं, चारों गिरियाँ आसपास जुड़ी रहती हैं। अखरोटों की इन चार गिरियों को चार वेदों का प्रतीक माना जाता है। अखरोट की चार गिरियाँ चार वेदों का आह्वान करती हैं। वेद, जो सत्य का आधार हैं, उनके ज्ञान से माया जाल के बादल

फाल्गुन कृष्ण चतुर्दशी को शिवरात्रि पर्व मनाया जाता है। माना जाता है कि सृष्टि के प्रारंभ में इसी दिन मध्यरात्रि भगवान शंकर का ब्रह्मा से रुद्र के रूप में अवतरण हुआ था। प्रलय की वेला में इसी दिन प्रदोष के समय भगवान शिव तांडव करते हुए ब्रह्मांड को तीसरे नेत्र की ज्वाला से समाप्त कर देते हैं। इसीलिए इसे महाशिवरात्रि अथवा कालरात्रि कहा गया। तीनों भुवनों की अपार सुंदरी तथा शीलवती गौरा को अर्धांगिनी बनाने वाले शिव प्रेतों व पिशाचों से घिरे रहते हैं। उनका रूप बड़ा अजीब है। शरीर पर मसानों की भस्म, गले में सर्पों का हार, कंठ में विष, जटाओं में जगत-तारिणी पावन गंगा तथा माथे में प्रलयंकर ज्वाला है।

छँटते हैं और हम सात्विकता को प्राप्त करते हैं। सात्विकता के द्वारा शिव रूपी परमब्रह्म की प्राप्ति होती है।

संसार को चालित करनेवाले तीन प्रमुख तत्व हैं- सात्विक, राजसिक व तामसिक। राजसिक तत्व का कारक स्वयं मनुष्य है, वह अपनी योग क्रियाओं व पूजा-अर्चना द्वारा सात्विकता प्राप्त करता है। पाँच अवगुणों का मिश्रण तामसिक तत्व अर्थात् काम, क्रोध, वासना, ईर्ष्या, द्वेष जो हर व्यक्ति के अंदर पाया जाता है। इन पाँच दोषों पर विजय प्राप्त करके ही कोई पुरुष राजसिक व सात्विक बन सकता है और द्वादशी के दिन सात्विक पुरुष ही अंतर्ध्यान होकर इष्टदेव का दर्शन प्राप्त कर सकता है। अतः चार वेदों का ज्ञान होने पर ही शिवरात्रि के अखरोटों में शिव दर्शन संभव है।

पौराणिक कथाएँ

महाशिवरात्रि के महत्त्व से संबंधित तीन कथाएँ इस पर्व से जुड़ी हैं :-

प्रथम कथा- एक बार माँ पार्वती ने शिव से पूछा कि कौन-सा व्रत उनको सर्वोत्तम भक्ति व पुण्य प्रदान कर सकता है? तब शिव ने स्वयं इस शुभ दिन के विषय में बताया था कि फाल्गुन कृष्ण पक्ष के चतुर्दशी की रात्रि को जो उपवास करता है, वह मुझे प्रसन्न कर लेता है। मैं अभिषेक, वस्त्र, धूप, अर्ध्य तथा पुष्प आदि समर्पण से उतना प्रसन्न नहीं होता, जितना कि व्रत-उपवास से।

द्वितीय कथा- इसी दिन, भगवान विष्णु व ब्रह्मा के समक्ष सबसे पहले शिव का अत्यंत प्रकाशवान आकार प्रकट हुआ था। ईशान संहिता के अनुसार- श्रीब्रह्मा व श्रीविष्णु को अपने अच्छे कर्मों का अभिमान हो गया। इससे दोनों में संघर्ष छिड़ गया। अपना महात्म्य व श्रेष्ठता सिद्ध करने के लिए दोनों आमादा हो उठे, तब शिव ने हस्तक्षेप करने का निश्चय किया, चूंकि वे इन दोनों देवताओं को यह आभास व विश्वास दिलाना चाहते थे कि जीवन भौतिक आकार-प्रकार से कहीं अधिक है। शिव अग्नि स्तम्भ के रूप में प्रकट हुए। इस स्तम्भ का आदि या अंत दिखाई नहीं दे रहा था। विष्णु और ब्रह्मा ने इस स्तम्भ के ओर-छोर को जानने का निश्चय किया। विष्णु नीचे पाताल की ओर इसे जानने गए और ब्रह्मा अपने हंस वाहन पर बैठ ऊपर गए। वर्षों यात्रा के बाद भी वे इसका आरंभ या अंत न जान सके। वे वापस आए, अब तक उनका क्रोध भी शांत हो चुका था तथा उन्हें भौतिक आकार की सीमाओं का ज्ञान मिल गया था। जब उन्होंने अपने अहम् को समर्पित कर दिया, तब शिव प्रकट हुए तथा सभी विषय वस्तुओं को पुनर्स्थापित किया। शिव का यह प्राकट्य फाल्गुन कृष्ण चतुर्दशी की रात्रि को ही हुआ था। इसलिए इस रात्रि को महाशिवरात्रि कहते हैं।

तृतीय कथा- इसी दिन भगवान शिव और आदि शक्ति का विवाह हुआ था। भगवान शिव का ताण्डव और भगवती का हास्यनृत्य दोनों के समन्वय से ही सृष्टि में संतुलन बना हुआ है, अन्यथा ताण्डव नृत्य से सृष्टि खण्ड-खण्ड हो जाये। इसलिए यह महत्त्वपूर्ण दिन है।

फाल्गुन व्रत कथा

फाल्गुन कृष्ण चतुर्दशी को शिवरात्रि पर्व मनाया जाता है। माना जाता है कि सृष्टि के प्रारंभ में इसी दिन मध्यरात्रि भगवान शंकर का ब्रह्मा से रुद्र के रूप में अवतरण हुआ था। प्रलय की वेला में इसी दिन प्रदोष के समय भगवान शिव तांडव करते हुए ब्रह्मांड को तीसरे नेत्र की ज्वाला से समाप्त कर देते हैं। इसीलिए इसे महाशिवरात्रि अथवा कालरात्रि कहा गया। तीनों भुवनों की अपार सुंदरी तथा शीलवती गौरा को अर्धांगिनी बनाने वाले शिव प्रेतों व पिशाचों से घिरे रहते हैं। उनका रूप बड़ा अजीब है। शरीर पर मसानों की भस्म, गले में सर्पों का हार, कंठ में विष, जटाओं में जगत-तारिणी पावन गंगा तथा माथे में प्रलयंकर ज्वाला है।

सावन व्रत कथा

एक कथा के अनुसार जब सनत कुमारों ने महादेव से उन्हें सावन महीना प्रिय होने का कारण पूछा तो महादेव भगवान शिव ने बताया कि जब देवी सती ने अपने पिता दक्ष के घर में योगशक्ति से शरीर त्याग किया था, उससे पहले देवी सती ने महादेव को हर जन्म में पति के रूप में पाने का प्रण किया था। अपने दूसरे जन्म में देवी सती ने पार्वती के नाम से हिमाचल और रानी मैना के घर में पुत्री के रूप में जन्म लिया। पार्वती ने सावन के महीने में निराहार रह कर कठोर व्रत किया और उन्हें प्रसन्न कर विवाह किया, जिसके बाद ही महादेव के लिए यह विशेष हो गया। यही कारण है कि सावन के महीने में सुयोग्य वर की प्राप्ति के लिए कुंवारी लड़कियाँ व्रत रखती हैं।

कहते हैं सावन शिवरात्रि के दिन किए गए पूजन से ही भोले प्रसन्न हो जाते है और समस्त कष्टों से मुक्ति मिल जाती है। यदि किया जाए पूर्ण विधि विधान के साथ शिव अभिषेक तो समझो सारे संकट पल में दूर हो जाएंगे। माना जाता है कि इस दिन भोले बाबा से जो मांगो वो मिलता है। इस दिन रुद्राभिषेक करने से समस्त पापों और दुर्भाग्यों का शमन होता है।

यह दिन काल सर्प दोष मुक्ति के लिए श्रेष्ठ माना गया है। कई शिव मंदिरों में इस दिन जातक अनुष्ठान करते हैं। भगवान शंकर को गंगाजल अर्पित करने के लिए कांवड़िए, हरिद्वार व गौमुख आते और जाते हैं। स्कंद पुराण व शिव पुराण में भी इस दिन के महत्व का वर्णन है। इस दिन जो प्राणी उपवास करता है, उसकी मनोकामनाएं पूरी होती हैं।

शिव की कृपा

देवों के देव देवाधिदेव महादेव ही एक मात्र ऐसे भगवान हैं, जिनकी भक्ति हर कोई करता है। चाहे वह इंसान हो, राक्षस हो, भूत-प्रेत हो अथवा देवता हो। यहां तक कि पशु-पक्षी, जलचर, नभचर, पाताललोक वासी हो अथवा बैकुण्ठवासी हो। शिव की भक्ति हर जगह हुई और जब तक दुनिया कायम है, शिव की महिमा गाई जाती रहेगी।

शिव पुराण कथा के अनुसार शिव ही ऐसे भगवान हैं, जो शीघ्र प्रसन्न होकर अपने भक्तों को मनचाहा वर दे देते हैं। वे सिर्फ अपने भक्तों का कल्याण करना चाहते हैं। वे यह नहीं देखते कि उनकी भक्ति करने वाला इंसान है, राक्षस है, भूत-प्रेत है या फिर किसी और योनि का जीव है। शिव को प्रसन्न करना सबसे आसान है।

शिवलिंग की महिमा बताते हुए कहा कि शिवलिंग में मात्र जल चढ़ाकर या बेलपत्र अर्पित करके भी शिव को प्रसन्न किया जा सकता है। इसके लिए किसी विशेष पूजन विधि की आवश्यकता नहीं है।

एक कथा के अनुसार वृत्तासुर के आतंक से देवता भयभीत थे। वृत्तासुर को श्राप था कि वह शिव पुत्र के हाथों ही मारा जाएगा। इसलिए पार्वती के साथ शिवजी का विवाह कराने के लिए सभी देवता चिंतित थे, क्योंकि भगवान शिव समाधिस्थ थे और जब तक समाधि से उठ नहीं जाते, विवाह कैसे होता? देवताओं ने विचार करके रति व कामदेव से शिव की समाधि भंग करने का निवेदन किया। कामदेव ने शिवजी को जगाया तो क्रोध में शिव ने कामदेव को भस्म कर दिया। रति विलाप करने लगी तो शिव ने वरदान दिया कि द्वापर में कामदेव, कृष्ण भगवान के पुत्र प्रद्युम्न के रूप में जन्म लेंगे।

यज्ञ का आयोजन हमेशा विश्व कल्याण के लिए होता है, लेकिन राजा दक्ष को राज्य पाने के बाद अभिमान हो गया था। इसलिए उसने भोलेनाथ के साथ पहुँचे उनके गणों का अपमान किया। शिव ने क्रोध से दक्ष के यज्ञ को खंडित कर दिया।

ज्योतिर्लिंग

बारह स्थानों पर बारह ज्योतिर्लिंग स्थापित हैं-

१. श्री सोमनाथ- गुजरात राज्य के सौराष्ट्र प्रदेशान्तर्गत बैरावल शहर से ६ किलोमीटर प्रभास क्षेत्र में स्थित है।

२. श्री मल्लिकार्जुन- दक्षिणी भारत आन्ध्र प्रदेशान्तर्गत हैदराबाद से २४० किलोमीटर दूर कुर्नुल, गढ़वाल दोनों रेलवे स्टेशन हैं इनसे १२५ किमी. शैलपर्वत पर विराजमान है।

३. श्री महाकालेश्वर- मध्य प्रदेश में भौपाल से १८८ कि.मी. दूर मालवा प्रदेशान्तर्गत क्षिप्रा नदी तटे उज्जैन में विराजमान हैं।

४. श्री ओंकारेश्वर- मध्य प्रदेश के मालवा प्रान्त में दूजा तीर्थ है। यह इन्दौर से ८० कि.मी. दूरी पर नर्मदा व कावेरी का जल प्रवाह होकर जाता है।

५. श्री केदारनाथ- भारत के उत्तरी भाग में केदारनाथ, बद्रीनाथ दोनों तीर्थ हैं पहले केदारनाथ के दर्शन कर के पूर्णता मिलती है।

६. श्री भीमशंकर- महाराष्ट्र राज्य के पूना शहर से १२८ किलोमीटर बस से भीम शंकर पहुँचा जाता है।

७. श्री विश्वेश्वर- उत्तर प्रदेश राज्यान्तर्गत वाराणसी में विराजमान हैं। यह शिव जी की प्रिय नगरी है।

८. श्री त्रयम्बकेश्वर- महाराष्ट्र राज्य में बम्बई के पास नासिक शहर से ३० किलोमीटर दूर विराजमान है। यहां से १८ कि.मी की दूरी पर पंचवटी प्रदेश है।

९. श्री बैजनाथ- झारखण्ड राज्य के देवघर जिले के जैसीडीह रेलवे स्टेशन से ३ कि.मी. की दूरी पर माँ सति का अन्तिम संस्कार हुआ, इसे चिता भूमि कहते हैं।

१०. श्री नागेश्वर- गुजरात राज्य के सौराष्ट्र प्रदेशान्तर्गत गोमती नदी के तट पर ओखा रेलवे स्टेशन से और बेट द्वारिका से १० कि.मी. की दूरी पर है।

११. श्री सेतुबन्ध रामेश्वर- तमिलनाडू राज्य रामनाड़ जिले के रामनाथपुरम के पास गंध मादन द्वीप पर स्थित है। लंका जाने के लिए नल,नील द्वारा इस सेतु का निर्माण हुआ।

१२. श्री घुश्मेश्वर- महाराष्ट्र राज्य में मनमाड से १०९ कि.मी. दूर दौलताबाद से चलकर औरंगाबाद से ३५ कि.मी. दूर एलोरा की गुफाओं के पास देवगिरि पहाड़ी से प्रसिद्ध है।

इन स्थानों पर शिवरात्रि पूजन होता है लोग कांवड़ लाते हैं।

कांवड़

बड़ा या महान बनने के लिए त्याग, तपस्या, धीरज, उदारता और सहनशक्ति की दरकार होती है। विष को अपने भीतर ही सहेजकर आश्रितों के लिए अमृत देने वाले होने से और विरोधों, विषमताओं को भी संतुलित रखते हुए एक परिवार बनाए रखने से शिव महादेव हैं। आपके समीप पार्वती का शेर, आपका बैल, शरीर के सांप, कुमार कार्तिकेय का मोर, गणेशजी का मूषक, विष की अग्नि और गंगा का जल, कभी पिनाकी धनुर्धर वीर तो कभी नरमुण्डधर कपाली, कहीं अर्धनारीश्वर तो कहीं महाकाली के पैरों में लुण्ठित, कभी मृड यानी सर्वधनी तो कभी दिगम्बर, निमार्णदेव भव और संहारदेव रुद्र, कभी भूतनाथ कभी विश्वनाथ आदि सब विरोधी बातों का जिनके प्रताप से एक जगह पावन संगम होता हो, वे ही तो देवों के देव महादेव हैं।

पं. खानचन्द शर्मा

भक्त अपने आराध्य को प्रसन्न करने के लिए मिट्टी के कलश (अब यह स्थान प्लास्टिक ने ले लिया है) में हरिद्वार, गंगोत्री व गौमुख से पैदल चलकर गंगाजल लाते हैं। इसे कांवड़ लाना बोलते हैं। कांवड़ लाने के कई ढंग हैं, जैसे रुक-रुक कर, खड़ी कांवड़, डाक कांवड़ व एक टांग पर कांवड़ लाना। पूर्वजों की आत्मा शान्ति हेतु शिव लिंग पर जल चढ़ाने का महत्व है।

श्रावण माह का विशेष महत्त्व और कैसे करें सावन में भगवान शिव की पूजा। 'श्रावण मास' की पूर्णिमा के दिन श्रवण नक्षत्र होने से मास का नाम श्रावण हुआ और वैसे तो प्रतिदिन ही भगवान शिव की पूजा करनी चाहिए। लेकिन श्रावण मास में भगवान शिव के कैलाश में आगमन के कारण व श्रावण मास भगवान शिव को प्रिय होने से की गई समस्त आराधना शीघ्र फलदाई होती है। श्रावण मास कर्क की संक्रान्ति से आरंभ होता है। जो भक्त पूरे महीने उपवास नहीं कर सकते वे श्रावण मास के सोमवार का व्रत कर सकते हैं। सोमवार के समान ही प्रदोष का महत्व है। इसलिए श्रावण में सोमवार व प्रदोष में भगवान शिव की विशेष अराधना की जाती है। पुराणों में वर्णित कथा के अनुसार श्रावण में ही समुद्र मंथन से निकला विष भगवान शंकर ने पीकर सृष्टि की रक्षा की थी। इसलिए इस माह में शिव अराधना करने से भोलेनाथ की कृपा प्राप्त होती है। शिवरात्रि या शिवचौदस- फाल्गुन कृष्ण चतुर्दशी की महादशा यानी आधी रात के वक्त भगवान शिव लिंग रूप में प्रकट हुए थे, ऐसा ईशान संहिता में कहा गया है। इसीलिए सामान्य जनों के द्वारा पूजनीय रूप में भगवान शिव के प्राकट्य समय यानी आधी रात में जब चौदस हो उसी दिन यह व्रत किया जाता है।

बेल (बिल्व) पत्र का महत्त्व- बेल के पत्ते श्रीशिव

को अत्यंत प्रिय हैं। शिव पुराण में एक शिकारी की कथा है। एक बार उसे जंगल में देर हो गयी, तब उसने एक बेल वृक्ष पर रात बिताने का निश्चय किया। जगे रहने के लिए उसने एक तरकीब सोची- वह सारी रात एक-एक कर पत्ता तोड़कर नीचे फेंकता गया। कथानुसार, बेलवृक्ष के ठीक नीचे एक शिवलिंग था। शिवलिंग पर प्रिय पत्तों का अर्पण होते देख, शिव प्रसन्न हो उठे। जबकि शिकारी को अपने शुभ कृत्य का आभास ही नहीं था। शिव ने उसे उसकी इच्छापूर्ति का आशीर्वाद दिया। यह कथा न केवल यह बताती है कि शिव को कितनी आसानी से प्रसन्न किया जा सकता है, बल्कि यह भी कि इस दिन शिव पूजन में बेल पत्र का कितना महत्त्व है।

शिवलिंग- वातावरण सहित घूमती धरती या सारे अनंत ब्रह्माण्ड का अक्स ही लिंग है। इसीलिए इसका आदि और अन्त भी साधारण जनों की क्या बिसात, देवताओं के लिए भी अज्ञात है। सौरमण्डल के ग्रहों के घूमने की क्रिया ही शिव तन पर लिपटे सांप हैं। मुण्डकोपनिषद के कथानुसार सूर्य, चांद और अग्नि ही आपके तीन नेत्र हैं। बादलों के झुरमुट जटाएं, आकाश जल ही सिर पर स्थित गंगा और सारा ब्रह्माण्ड ही आपका शरीर है। शिव कभी गर्मी के आसमान (शून्य) की तरह कर्पूर गौर या चांदी की तरह दमकते, कभी सर्दी के आसमान की तरह मटमैले होने से राख भभूत लिपटे तन वाले हैं। यानी शिव सीधे-सीधे ब्रह्माण्ड या अनन्त प्रकृति की ही साक्षात मूर्ति हैं। मानवीकरण में वायु प्राण, दस दिशाएँ, पंचमुख महादेव के दस कान, हृदय सारा विश्व, सूर्य नाभि या केन्द्र और अमृत यानी जलयुक्त कमण्डलु हाथ में रहता है। लिंग शब्द का अर्थ चिह्न, निशानी या प्रतीक है। शून्य, आकाश, अनन्त, ब्रह्माण्ड और निराकार परमपुरुष का प्रतीक होने से इसे लिंग कहा गया है। स्कन्द पुराण में कहा है कि आकाश स्वयं लिंग है । धरती उसका पीठ या आधार है और सब अनन्त शून्य से पैदा हो उसी में लय होने के कारण इसे लिंग कहा गया है।

जल- रचना या निर्माण का पहला पग बोना, सींचना या उडेलना हैं। बीज बोने के लिए गर्मी का ताप और जल की नमी की एक साथ जरुरत होती है। अतः आदिदेव शिव पर जीवन की आदिमूर्ति या पहली रचना, जल चढ़ाना ही नहीं लगातार अभिषेक करना अधिक महत्त्वपूर्ण होता जाता है। सृष्टि स्थिति संहार लगातार, बार-बार होते ही रहना प्रकृति का नियम है। अभिषेक का बहता जल चलती, जीती-जागती दुनिया का प्रतीक है।

वास्तव में रात्रि का एक और अर्थ भी है - वह जो तीन प्रकार की समस्या से विश्राम प्रदान करे वह रात्रि है। यह तीन बातें क्या हैं? शान्तिः, शान्तिः, शान्तिः। शरीर, मन और आत्मा की शांति, आध्यात्मिक, अधिभौतिक अदिदैविक। तीन प्रकार की शान्ति की आवश्यकता हैं, पहली भौतिक सुख, जब आपके आस पास गडबड़ी हो तो आप शान्ति से बैठे नहीं रह सकते। दूसरी आपको आपके वातावरण, शरीर और मन में शान्ति चाहिये।

शिव महादेव- बड़ा या महान बनने के लिए त्याग, तपस्या, धीरज, उदारता और सहनशक्ति की दरकार होती है। विष को अपने भीतर ही सहेजकर आश्रितों के लिए अमृत देने वाले होने से और विरोधों, विषमताओं को भी संतुलित रखते हुए एक परिवार बनाए रखने से शिव महादेव हैं। आपके समीप पार्वती का शेर, आपका बैल, शरीर के सांप, कुमार कार्तिकेय का मोर, गणेशजी का मूषक, विष की अग्नि और गंगा का जल, कभी पिनाकी धनुर्धर वीर तो कभी नरमुण्डधर कपाली, कहीं अर्धनारीश्वर तो कहीं महाकाली के पैरों में लुण्ठित, कभी मृड यानी सर्वधनी तो कभी दिगम्बर, निमार्णदेव भव और संहारदेव रुद्र, कभी भूतनाथ कभी विश्वनाथ आदि सब विरोधी बातों का जिनके प्रताप से एक जगह पावन संगम होता हो, वे ही तो देवों के देव महादेव हैं।

शिवपुत्र शनि- संस्कृत शब्द शनि का अर्थ जीवन या जल और अशनि का अर्थ आसमानी बिजली या आग है। शनि की पूजा के वैदिक मन्त्र में वास्तव में गैस, द्रव और ठोस रूप में जल की तीनों अवस्थाओं की अनुकूलता की ही प्रार्थना है। खुद मूल रूप में जल होने से शनि का मानवीकरण पुराणों में शिवपुत्र या शिवदास के रूप में किया गया है। इसीलिए कहा जाता है कि शिव और शनि दोनों ही खुश हों तो निहाल करें और नाराज हों तो बेहाल करते हैं। सूर्य जीवन का आधार, सृष्टि स्थिति का मूल, वर्षा का कारण होने से पुराणों में खुद शिव या विष्णु का रूप माना गया है। निर्देश है कि शिव या विष्णु की पूजा, सूर्य पूजा के बिना अधूरी है। खुद सूर्य जलकारक दायक पोषक होने और शनि स्वयं जल रूप होने से इस बात में कोई विरोध नहीं हैं।

पंचमुख शिव- पांच तत्त्व ही पांच मुख हैं। योगशास्त्र में पंचतत्वों के रंग लाल, पीला, सफेद, सांवला व काला बताए गए हैं। इनके नाम भी जल, वायु, आकाश, अग्नि, पृथ्वी हैं। प्रकृति का मानवीकरण ही पंचमुख होने का आधार है।

शिवरात्रि ही क्यों? शिव दिन क्यों नहीं - रात्रि का अर्थ वह जो आपको अपनी गोद में लेकर सुख और विश्राम प्रदान करे । रात्रि हर बार सुखदायक होती है, सभी गतिविधियां ठहर जाती हैं, सब कुछ स्थिर और शांतिपूर्ण हो जाता है, पर्यावरण शांत हो जाता है, शरीर थकान के कारण निद्रा में चला जाता है। शिवरात्रि गहन विश्राम की अवस्था है। जब मन, बुद्धि और अहंकार दिव्यता की गोद में विश्राम करते हैं तो वह वास्तविक विश्राम है। यह दिन शरीर व मन की कार्य प्रणाली को विश्राम देने का उत्सव है।

वास्तव में रात्रि का एक और अर्थ भी है - वह जो तीन प्रकार की समस्या से विश्राम प्रदान करे वह रात्रि है। यह तीन बातें क्या हैं? शान्तिः, शान्तिः, शान्तिः। शरीर, मन और आत्मा की शांति, आध्यात्मिक, अधिभौतिक अदिदैविक। तीन प्रकार की शान्ति की आवश्यकता हैं, पहली भौतिक सुख, जब आपके आस पास गडबड़ी हो तो आप शान्ति से बैठे नहीं रह सकते। दूसरी आपको आपके वातावरण, शरीर और मन में शान्ति चाहिये। तीसरी बात हैं आत्मा की शांति। आपके वातावरण में शांति हो सकती है, आप स्वास्थ्य शरीर का और कुछ हद तक मन की शान्ति का भी आनंद ले

सकते है लेकिन यदि आत्मा बेचैन हैं तो कुछ भी सुख दायक नहीं लगता । इसलिए वह शान्ति भी आवश्यक है । इसलिए तीनों प्रकार की शान्ति की मौजूदगी से ही सम्पूर्ण शान्ति प्राप्त हो सकती है। एक के बिना अन्य अधूरे हैं।

शिवरात्रि की रात में पूजा- प्रत्येक महीने की कृष्ण पक्ष की चतुर्दशी को मास शिवरात्रि कहा जाता है। इनमें सबसे प्रमुख है फाल्गुन मास की कृष्ण पक्ष की चतुर्दशी जिसे महाशिवरात्रि के नाम से जाना जाता है। शास्त्रों में कहा गया है कि महाशिवरात्री की रात में देवी पार्वती और भगवान भोलेनाथ का विवाह हुआ था इसलिए यह शिवरात्रि वर्ष भर की शिवरात्रि से उत्तम है।

महाशिवरात्रि के विषय में यह भी मान्यता है कि इस दिन भगवान भोलेनाथ का अंश प्रत्येक शिवलिंग में पूरे दिन और रात मौजूद रहता है। इस दिन शिव जी की उपासना और पूजा करने से शिव जी जल्दी प्रसन्न होते हैं। शिवपुराण के अनुसार सृष्टि के निर्माण के समय महाशिवरात्रि की मध्यरात्रि में शिव का रूद्र रूप प्रकट हुआ था।

ज्योतिषीय दृष्टि से महाशिवरात्रि की रात्रि का बड़ा महत्व है। भगवान शिव के सिर पर चन्द्रमा विराजमान रहता है। चन्द्रमा को मन का कारक कहा गया है। कृष्ण पक्ष की चतुर्दशी की रात में चन्द्रमा की शक्ति लगभग पूरी तरह क्षीण हो जाती है। जिससे तामसिक शक्तियां व्यक्ति के मन पर अधिकार करने लगती हैं जिससे पाप प्रभाव बढ़ जाता है। भगवान शंकर की पूजा से मानसिक बल प्राप्त होता है जिससे आसुरी और तामसिक शक्तियों के प्रभाव से बचाव होता है।

रात्रि से शंकर जी का विशेष स्नेह होने का एक कारण यह भी माना जाता है कि भगवान शंकर संहारकर्ता होने के कारण तमोगुण के अधिष्ठिता यानी स्वामी हैं। रात्रि भी जीवों की चेतना को छीन लेती है और जीव निद्रा देवी की गोद में सोने चला जा जाता है इसलिए रात को तमोगुणमयी कहा गया है। यही कारण है कि तमोगुण के स्वामी देवता भगवान शंकर की पूजा रात्रि में विशेष फलदायी मानी जाती है।

शुभ कार्य आरंभ के लिए श्रेष्ठ दिन- महाशिवरात्रि का व्रत शास्त्रों में श्रेष्ठ माना गया है। शास्त्रों में इस व्रत को महा व्रत की संज्ञा दी गई है। महाशिवरात्रि पर्व का दिन किसी भी शुभ कार्य को आरंभ करने के लिए श्रेष्ठ होता है। महाशिवरात्रि को रात के समय शिवलिंग व शिव मूर्ति की पूजा का विशेष महत्व है। महाशिवरात्रि पर्व में रात के समय जागरण करने से इच्छित फल की प्राप्ति होती है। इस दिन उपवास रखकर शिव शंकर की उपासना करनी चाहिए।

उपवास में रात्रि जागरण- ऋषि मुनियों ने समस्त आध्यात्मिक अनुष्ठानों में उपवास को महत्वपूर्ण माना है। 'विषया विनिवर्तन्ते निराहारस्य देनिहः' के अनुसार उपवास विषय निवृत्ति का अचूक साधन है। अतः आध्यात्मिक साधना के लिए उपवास करना परमावश्यक है। उपवास के साथ रात्रि जागरण के महत्व पर संतों का यह कथन अत्यंत प्रसिद्ध है-'या निशा सर्वभूतानां तस्यां जाग्रति संयमी।' इसका सीधा तात्पर्य यही है कि उपासना से इन्द्रियों और मन पर नियंत्रण करने वाला संयमी व्यक्ति ही रात्रि में जागकर अपने लक्ष्य को प्राप्त करने के लिए प्रयत्नशील हो सकता है। अतः शिवोपासना के लिए उपवास एवं रात्रि जागरण उपयुक्त हो सकता है? रात्रि प्रिय शिव से भेंट करने का समय रात्रि के अलावा और कौन सा समय हो सकता है? इन्हीं सब कारणों से इस महान व्रत में व्रतीजन उपवास के साथ रात्रि में जागकर शिव पूजा करते हैं। इसलिए महाशिवरात्रि को रात के चारों पहरों में विशेष पूजा की जाती है। सुबह आरती के बाद यह उपासना पूर्ण होती है।

शिवरात्रि कैसे मनाएं

रात्रि में उपवास करें। दिन में केवल फल और दूध पियें। भगवान शिव की विस्तृत पूजा करें, रुद्राभिषेक करें तथा शिव के मन्त्र

देव-देव महादेव नीलकंठ नमो स्तुते।
कर्तुमिच्छाम्यहं देव शिवरात्रिव्रतं तव।।
तव प्रसादाद् देवेश निर्विघ्न भवेदिति।
कामाश्वाः शत्रवो मां वै पीडांकुर्वन्तु नैव हि।।

का यथा शक्ति पाठ करें और शिव महिमा से युक्त भजन गाएं।

'ऊँ नमः शिवाय' मन्त्र का उच्चारण जितनी बार हो सके, करें तथा मात्र शिवमूर्ति और भगवान शिव की लीलाओं का चिंतन करें।

रात्रि में चारों पहरों की पूजा में अभिषेक जल में पहले पहर में दूध, दूसरे में दही, तीसरे में घी और चौथे में शहद को मुख्यतः शामिल करना चाहिए।

शिव के संग गौरी की भी हो पूजा

धार्मिक मान्यतानुसार भगवान शंकर इस दिन संपूर्ण शिवलिंगों में प्रवेश करते हैं। शिव मनुष्य जीवन में सुख संपत्ति, ऋद्धि-सिद्धि, बल-वैभव, स्वास्थ्य, निरोगता, दीर्घायु, लौकिक-पारलैकिक सभी शुभ फलों के दाता हैं। शक्ति का हर रूप शिव के साथ ही निहित है। इसलिए महाशिवरात्रि पर शिव और शक्ति की संयुक्त रूप से आराधना करनी

चाहिए। शिवरात्रि को आसुरी शक्तियों पर विजय प्राप्त करने के लिए शिव और शक्ति का योग भी कहा गया है।

कुंवारी और सुहागिनों के भी आराध्य

महाशिवरात्रि का पावन दिन सभी कुंवारी कन्याओं को मनचाहा वर और विवाहित महिलाओं को अखंड सुहाग का वरदान दिलाने वाला सुअवसर प्रदान करता है। अगर विवाह में कोई बाधा आ रही हो, तो भगवान शिव और जगत जननी के विवाह दिवस यानी महाशिवरात्रि पर इनकी पूजा-अर्चना करने से मनोकामनाएं अवश्य पूर्ण होती हैं।

इस दिन व्रती को फल, पुष्प, चंदन, बिल्वपत्र, धतूरा, धूप, दीप नैवेध। से चारों प्रहर की पूजा करनी चाहिए। दूध, दही, घी, शहद और शक्कर से अलग-अलग तथा सबको एक साथ मिलाकर पंचामृत से शिव को स्नान कराकर जल से अभिषेक करें। चारों प्रहर के पूजन में शिव पंचाक्षर 'ऊँ नमः शिवाय' मंत्र का जप करें। भव, शर्व, रुद्र, पशुपति, उग्र, महान, भीम और ईशान, इन आठ नामों से पुष्प अर्पित कर भगवान की आरती और परिक्रमा करें।

महा शिवरात्रि और महाकाल की महिमा

अनेकानेक प्राचीन वांग्मय महाकाल की व्यापक महिमा से आपूरित हैं क्योंकि वे कालखंड, काल सीमा, काल-विभाजन आदि के प्रथम उपदेशक व अधिष्ठाता हैं। स्कन्दपुराण के अवंती खंड में, शिव पुराण (ज्ञान संहिता अध्याय ३८), वराह पुराण, रुद्रयामल तंत्र, शिव महापुराण की विषेश्वर संहिता के तेइसवें अध्याय तथा रुद्रसंहिता के चौदहवें अध्याय में भगवान महाकाल की अर्चना, महिमा व विधान आदि का विस्तृत वर्णन किया गया है।

मृत्युंजय महाकाल की आराधना का मृत्यु शैया पर पड़े व्यक्ति को बचाने में विशेष महत्व है। खासकर तब जब व्यक्ति अकाल मृत्यु का शिकार होने वाला हो। इस हेतु एक विशेष जाप से भगवान महाकाल का लक्षार्चन अभिषेक किया जाता है-

'ऊँ ह्रौं जूं सः ऊँ भूर्भुवः स्वः,
ऊँ त्रयम्बकं यजामहे सुगन्धिं पुष्टिवर्धनम,
उर्वारुकमिव बन्धनान्मृत्योर्मुक्षीय मामृतात'
'ऊँ स्वः ऊँ भुवः भूः ऊँ सः जूं हौं ऊँ।'

इसी तरह सर्वव्याधि निवारण हेतु इस मंत्र का जाप किया जाता है।

'मृत्युंजय महादेव त्राहिमां शरणागतम
जन्म मृत्यु जरा व्याधि पीड़ितं कर्म बंधनः

शिवरात्रि में शिवोत्सव समूचे उज्जैन में मनाया जाता है। इन दिनों भक्तवत्सल्य भगवान आशुतोष महाकालेश्वर का विशेष श्रृंगार किया जाता है, उन्हें विविध प्रकार के फूलों से सजाया जाता है। यहाँ तक कि भक्तजन अपनी श्रद्धा का अर्पण इतने विविध रूपों में करते है कि देखकर आश्चर्य होता है।

कोई बिल्वपत्र की लंबी घनी माला चढ़ाता है। कोई बेर,संतरा, केले, और दूसरे फलों की माला लेकर आता है। कोई आँकड़ों के पत्तों पर चंदन से बना कर अर्पित करता है।

औढ़रदानी, प्रलयंकारी, दिगम्बर भगवान शिव का यह सुहाना सुसज्जित सुंदर स्वरूप देखने के लिए भक्तों की भीड़ उमड़ पड़ती है। इसे 'सेहरा' के दर्शन कहा जाता है। अंत में श्री महाकालेश्वर से परम पुनीत प्रार्थना है कि इस शिवरात्रि में इस अखिल सृष्टि पर वे प्रसन्न होकर प्राणी मात्र का कल्याण करें -

'कर-चरणकृतं वाक्कायजं कर्मजं वा
श्रवणनयनजं वा मानसं वापराधम,
विहितमविहितं वा सर्वमेतत्क्षमस्व,
जय-जय करुणाब्धे, श्री महादेव शम्भो।'

अर्थात हाथों से, पैरों से, वाणी से, शरीर से, कर्म से, कर्णों से, नेत्रों से अथवा मन से भी हमने जो अपराध किए हों, वे विहित हों अथवा अविहित, उन सबको है करुणासागर महादेव शम्भो! क्षमा कीजिए, एवं आपकी जय हो, जय हो।

महाशिवरात्रि पूजन : शिवपुराण विधि विधान

पं. खानचन्द शर्मा

शिवरात्रि पूजन शिवपुराण के अनुसार करें- शिवपुराण की कोटिरुद्रसंहिता में बताया गया है कि शिवरात्रि व्रत करने से व्यक्ति को भोग एवं मोक्ष दोनों ही प्राप्त होते हैं। ब्रह्मा, विष्णु तथा पार्वती के पूछने पर भगवान सदाशिव ने बताया कि शिवरात्रि व्रत करने से महान पुण्य की प्राप्ति होती है। मोक्ष की प्राप्ति कराने वाले चार संकल्प पर नियमपूर्वक पालन करना चाहिए।

ये चार संकल्प हैं- शिवरात्रि पर भगवान शिव की पूजा, रुद्रमंत्र का जप, शिवमंदिर में उपवास तथा काशी में देहत्याग। शिवपुराण में मोक्ष के चार सनातन मार्ग बताए गए हैं। इन चारों में भी शिवरात्रि व्रत का विशेष महत्व है। अतः इसे अवश्य करना चाहिए।

यह सभी के लिए धर्म का उत्तम साधन है। निष्काम अथवा सकामभाव से सभी मनुष्यों, वर्णों, स्त्रियों, बालकों तथा देवताओं के लिए यह महान व्रत परम हितकारक माना गया है। प्रत्येक मास के शिवरात्रि व्रत में भी फाल्गुन कृष्ण चतुर्दशी में होने वाले महाशिवरात्रि व्रत का शिवपुराण में विशेष महात्म्य है।

महाशिवरात्रि पूजा विधि

शिवपुराण के अनुसार व्रती पुरुष को प्रातः काल उठकर स्नान संध्या कर्म से निवृत्त होने पर मस्तक पर भस्म का तिलक और गले में रुद्राक्षमाला धारण कर शिवालय में जाकर शिवलिंग का विधिपूर्वक पूजन एवं शिव को नमस्कार करना चाहिए। तत्पश्चात उसे श्रद्धापूर्वक व्रत का इस प्रकार संकल्प करना चाहिए-

शिवरात्रिव्रतं ह्येतत करिष्येऽहं महाफलम।
निर्विघ्नमस्तु से चात्र त्वत्प्रसादाज्जगत्पते।

यह कहकर हाथ में लिए पुष्पाक्षत जल आदि को छोड़ने के पश्चात् यह श्लोक पढ़ना चाहिए-

देवदेव महादेव नीलकण्ठ नमोऽस्तुते
कर्तुमिच्छाम्यहं देव शिवरात्रिव्रतं तव।
तव प्रसादाद्देवेश निर्विघ्नेन भवेदिति।
कामाशः शत्रवो मां वै पीडां कुर्वन्तु नैव हि।।

हे देवदेव! हे महादेव! हे नीलकण्ठ! आपको नमस्कार है। हे देव! मैं आपका शिवरात्रि व्रत करना चाहता हूँ। हे देवश्वर! आपकी कृपा से यह व्रत निर्विघ्न पूर्ण हो और काम, क्रोध, लोभ आदि शत्रु मुझे पीड़ित न करें।

रात्रि पूजा का विधान

दिनभर अधिकारानुसार शिवमंत्र का यथाशक्ति जप करना चाहिए अर्थात् जो द्विज हैं और जिनका विधिवत यज्ञापवीत संस्कार हुआ है तथा नियमपूर्वक यज्ञोपवीत धारण करते हैं। उन्हें ओ२म नमः शिवाय मंत्र का जप करना चाहिए परंतु जो द्विजेतर अनुपनीत एवं स्त्रियां हैं, उन्हें प्रणवरहित केवल ओ३म नमः शिवाय मंत्र का ही जप करना चाहिए। रुग्ण, अशक्त और वृद्धजन दिन में फलाहार ग्रहण

कर रात्रि पूजा कर सकते हैं, वैसे यथाशक्ति बिना फलाहार ग्रहण किए रात्रिपूजा करना उत्तम है।

रात्रि के चारों प्रहरों की पूजा का विधान शास्त्रकारों ने किया है। सायंकाल स्नान करके किसी शिवमंदिर जाकर अथवा घर पर ही सुविधानुसार पूर्वाभिमुख या उत्तराभिमुख होकर और तिलक एवं रुद्राक्ष धारण करके पूजा का इस प्रकार संकल्प करे-देशकाल का संकीर्तन करने के अनंतर बोले- 'ममाखिलपापक्षयपूर्वकसकलाभीष्टसिद्धये शिवप्रीत्यर्थ च शिवपूजनमहं करिष्ये।' अच्छा तो यह है कि किसी वैदिक विद्वान ब्राह्मण के निर्देश में वैदिक मंत्रों से रुद्राभिषेक का अनुष्ठान करवाएं। - आचार्य गोविंद वल्लभ जोशी

महा शिवरात्रि पूजन की सरलतम विधि

महाशिवरात्रि पर्व पर भगवान शिव को प्रसन्न करने के लिए भक्त-गण विविध उपाय करते हैं। लेकिन हर उपाय साधारण जनमानस के लिए सरल नहीं होते।

पेश हैं घर पर ही महाशिवरात्रि पूजन की अत्यंत आसान विधि। यह पूजन विधि जितनी आसान है उतनी ही फलदायी भी। भगवान शिव अत्यंत सरल स्वभाव के देवता माने गए हैं अतः उन्हें सरलतम तरीकों से ही प्रसन्न किया जा सकता है।

वैदिक शिव पूजन - भगवान शंकर की पूजा के समय शुद्ध आसन पर बैठकर पहले आचमन करें। यज्ञोपवित धारण कर शरीर शुद्ध करें। तत्पश्चात आसन की शुद्धि करें। पूजन-सामग्री को यथास्थान रखकर रक्षादीप प्रज्ज्वलित कर लें।

अब स्वस्ति-पाठ करें।

स्वस्ति-पाठ -

स्वस्ति न इन्द्रो वृद्धश्रवाः, स्वस्ति ना पूषा विश्ववेदाः, स्वस्ति न स्तारक्ष्यो अरिष्टनेमि स्वस्ति नो बृहस्पति दर्धातु।

- इसके बाद पूजन का संकल्प कर भगवान गणेश एवं गौरी-माता पार्वती का स्मरण कर पूजन करना चाहिए। यदि आप रूद्राभिषेक, लघुरूद्र, महारूद्र आदि विशेष अनुष्ठान कर रहे हैं, तब नवग्रह, कलश, षोडश-मात्रका का भी पूजन करना चाहिए। संकल्प करते हुए भगवान गणेश व माता पार्वती का पूजन करें फिर नन्दीश्वर, वीरभद्र, कार्तिकेय (कुछ विद्वानों का मत है कि स्त्रियां कार्तिकेय का पूजन नहीं करें) एवं सर्प का संक्षिप्त पूजन करना चाहिए।

- इसके पश्चात हाथ में बिल्वपत्र एवं अक्षत लेकर भगवान शिव का ध्यान करें। भगवान शिव का ध्यान करने के बाद आसन, आचमन, स्नान, दही-स्नान, घी-स्नान, शहद-स्नान व शक्कर-स्नान कराएं।

- इसके बाद भगवान को एक साथ पंचामृत स्नान कराएं। फिर सुगंध-स्नान कराएं फिर शुद्ध स्नान कराएं। अब भगवान शिव को वस्त्र चढ़ाएं। वस्त्र के बाद जनेऊ चढाएं। फिर सुगंध, इत्र, अक्षत, पुष्पमाला, बिल्वपत्र चढाएं। अब भगवान शिव को विविध प्रकार के फल चढ़ाएं। इसके पश्चात धूप-दीप जलाएं। हाथ धोकर भोलेनाथ को नैवेद्ध चढाएं। नैवेध के बाद फल, पान-नारियल, दक्षिणा चढ़ाकर आरती करें।

- इसके बाद क्षमा-याचना करें।

क्षमा मंत्र : आह्वानं ना जानामि, ना जानामि विसर्जनम्, पूजाश्चैव न जानामि क्षम्यतां परमेश्वरः। इस प्रकार संक्षिप्त पूजन करने से ही भगवान शिव प्रसन्न होकर सारे मनोरथ पूर्ण करेंगे। घर में पूरी श्रद्धा के साथ साधारण पूजन भी किया जाए तो भगवान शिव प्रसन्न हो जाते हैं।

शिव के अन्य फलदायी मंत्र

शिव को पंचामृत से अभिषेक कराते हुए इस मंत्र का उच्चारण करें- ऊँ ऐं ह्रीं शिव गौरीमवय ह्रीं ऐं ऊँ।

महिलाएं सुख-सौभाग्य के लिए भगवान शिव की पूजा करके दुग्ध की धारा से अभिषेक करते हुए निम्न मंत्र का उच्चारण करें। मंत्रः ऊँ ह्रीं नमः शिवाय ह्रीं ऊँ।

लक्ष्मी अपने 'श्री' स्वरूप में अखंड रूप से केवल भगवान शिव की कृपा से ही जीवन में प्रकट हो सकती हैं।

अखंड लक्ष्मी प्राप्ति हेतु निम्न मंत्र की दस माला का जाप करें।

मंत्रः ऊँ श्रीं ऐं ऊँ।

शादी में हो रही देरी दूर करने के लिए इस मंत्र के साथ शिव-शक्ति की पूजा करें।

हे गौरि शंकरार्धांगि यथा त्वं शंकरप्रिया। तथा मां कुरु कल्याणी कान्तकांता सुदुर्लभाम।।

पुत्र विवाह के लिए निम्न मंत्र का जप मूंगा की माला से पुत्र द्वारा करवाएं।

पत्नी मनोरमां देहि मनोवृत्तानु सारिणीम
तारिणीं दुर्गसंसार सागरस्य कुलोद्भवाम

संपूर्ण पारिवारिक सुख-सौभाग्य हेतु निम्न मंत्र का जाप भी कर सकते हैं। ऊँ साम्ब सदा शिवाय नमः।।

महान अनुष्ठानों का दिन

शिव की जीवन शैली के अनुरूप, यह दिन संयम से मनाया जाता है। कुछ मुख्य अनुष्ठान है-रुद्राभिषेक, रुद्र महायज्ञ, रुद्र अष्टाध्यायी का पाठ, हवन, पूजन तथा बहुत प्रकार की अर्पण-अर्चना करना। इन्हें फूलों व शिव के एक हजार नामों के उच्चारण के साथ किया जाता है। इस धार्मिक कृत्य को लक्षार्चना या कोटि अर्चना कहा गया है। जैसे - लक्ष : लाख बार कोटि : एक करोड़ बार।

कारोबार वृद्धि के लिए- महाशिवरात्रि के सिद्ध मुहर्त में पारद शिवलिंग को प्राण प्रतिष्ठित करवाकर स्थापित करने से व्यवसाय में वृद्धि व नौकरी में तरक्की मिलती है।

बाधा नाश के लिए- शिवरात्रि के प्रदोष काल में स्फटिक शिवलिंग को शुद्ध गंगा जल, दूध, दही, घी, शहद व शक्कर से स्नान करवाकर धूप-दीप जलाकर निम्न मंत्र का जाप करने से समस्त बाधाओं का शमन होता है। ऊँ तत्पुरुषाय विद्महे महादेवाय धीमहि तन्नो रूद्रः प्रचोदयात।

बीमारी से छुटकारे के लिए- शिव मंदिर में लिंग पूजन कर दस हजार मंत्रों का जाप करने से प्राण रक्षा होती है। महामृत्युंजय मंत्र का जाप रुद्राक्ष की माला पर करें।

शत्रु नाश के लिए- शिवरात्रि को रूद्राष्टक का पाठ यथासंभव करने से शत्रुओं से मुक्ति मिलती है। मुकदमे में जीत व समस्त सुखों की प्राप्ति होती है।

मोक्ष के लिए- शिवरात्रि को एक मुखी रूद्राक्ष को गंगाजल से स्नान करवाकर धूप-दीप दिखा कर तख्ते पर स्वच्छ कपड़ा बिछाकर स्थापित करें। शिव रूप रूद्राक्ष के सामने बैठ कर सवा लाख मंत्र जप का संकल्प लेकर जाप आरंभ करें। जप शिवरात्रि के बाद भी जारी रखें। ओ३म नमः शिवाय।

शारीरिक पीड़ा निवारण के लिए-

शिवरात्रि के दिन भगवान शिव की प्रतिमा और महामृत्युंजय यंत्र को लाल रंग के वस्त्र पर रखकर, उसकी १६ उपचारों से पूजा करें।

व्यापार वृद्धि के लिए- व्यापार वृद्धि यंत्र बाजार से लाकर या पंडित से बनवाकर उसको पीले कपड़े पर रखकर १६ उपचारों से पूजा कर दुकान के पूजा स्थल पर स्थापित करें।

केस व क्लेश से छुटकारे के लिए- पंचमुखी रुद्राक्ष की माला लेकर ओ३म नमः शिवाय का जाप करें और फिर इसे गले में धारण कर लें।

काल सर्प दोषमुक्ति के लिए: ब्रह्म मुहूर्त में शिव मंदिर में जाकर १६ उपचारों से शिव की पूजा करें। पूजा के बाद धतूरा चढ़ाकर १०८ बार ओम नमः शिवाय का जाप करें और चांदी का नाग-नागिन शिवलिंग पर चढ़ाएं।

अभिषेक

भगवान शिव का अभिषेक अनेकों प्रकार से किया जाता है। जलाभिषेक : जल से, और दुग्धाभिषेक : दूध से किया जाता है।

शिवरात्रि पर्व : शिवाष्टक स्तोत्र

यह परम कल्याणकारी शिवाष्टक स्तोत्र। यह लयात्मक स्तोत्र बहुत थोड़े समय में कंठस्थ हो जाता है और इसका श्रद्धापूर्वक पाठ करें, तो वह शिवजी का कृपापात्र हो जाता है। यह रुद्राष्टक बहुत प्रसिद्ध और त्वरित फलदायी है। यह रामचरित मानस से लिया गया है।

नमः शिवायः
नमामीशमीशान निर्वाण :पं, विभुं व्यापकं ब्रह्म वेदः स्वरूपम ।
निजं निर्गुणं निर्विकल्पं निरीहं, चिदाकाश माकाशवासं भजेऽहम।।
निराकार मोंकार मूलं तुरीयं, गिराज्ञान गोतीतमीशं गिरीशम ।
करालं महाकाल कालं कृपालुं, गुणागार संसार पारं नतोऽहम।।
तुषाराद्रि संकाश गौरं गभीरं, मनोभूत कोटि प्रभा श्री शरीरम ।
स्फुरन्मौलि कल्लोलिनी चारू गंगा, लसद्भाल बालेन्दु कण्ठे भुजंगा ।
चलत्कुण्डलं शुभ्र नेत्रं विशालं, प्रसन्नाननं नीलकण्ठं दयालम ।
मृगाधीश चर्माम्बरं मुण्डमालं, प्रिय शंकरं सर्वनाथं भजामि।।
प्रचण्डं प्रकष्टं प्रगल्भं परेशं, अखण्डं अजं भानु कोटि प्रकाशम ।
त्रयशूल निर्मूलनं शूल पाणिं, भजेऽहं भवानीपतिं भाव गम्यम । ।
कलातीत कल्याण कल्पान्तकारी, सदा सच्चिनान्द दाता पुरारी।
चिदानन्द सन्दोह मोहापहारी, प्रसीद प्रसीद प्रभो मन्मथारी।।
न यावद् उमानाथ पादारविन्दं, भजन्तीह लोके परे वा नराणाम ।
न तावद् सुखं शांति सन्ताप नाशं, प्रसीद प्रभो सर्वं भूताधि वासं।।
न जानामि योगं जपं नैव पूजा, न तोऽहम सदा सर्वदा शम्भू तुभ्यम।
जरा जन्म दुःखौ तातप्यमानं, प्रभोपाहि आपन्नामामीश शम्भो ।
रूद्राष्टकं इदं प्रोक्तं विप्रेण हर्षोतये ।
ये पठन्ति नरा भक्तयां तेषां शंभो प्रसीदति।।

श्री शिव पंचाक्षरस्तत्रोम्

नागेन्द्रहाराय त्रिलोचनाय, भस्मांगरागाय महेश्वराय।
नित्यायशुद्धदाय दि गम्बराय तस्मै काराय ऊँ नमः शिवाय।।
मन्दाकिनी सलिल चन्दन चर्चिताय, नन्दीश्वरप्रमथनाथेश्वराय।
मंदारपुष्पबहुपुष्पसुपुजिताय तस्मै काराय ऊँ नमः शिवाय।।
शिवाय गौरी बदनाब्जवृन्दसूर्याय, दक्ष यज्ञ नाशकाय।
श्रीनीलकंठाय वृष्ध्वजाय तस्मै काराय ऊँ नमः शिवाय।।
वशिष्ठ कुम्भोद्भव गौतमार्य, मुनीद्र देवोर्चित शेखराय।
चन्द्रार्क वैश्वानर लोचनाय तस्मै काराय ऊँ नमः शिवाय।।
यक्ष स्वरूपाप जटाधराय पिनाक हस्ताय सनातनाय।
दिव्याय देवाय दिगम्बराय तस्मै काराय ऊँ नमः शिवाय।।
पंच्चाक्षरमिदं पुण्यं य पठेच्छेवसन्निधौ,
शिवलोकेमवाप्नोतिशिवेन सहमोदते।

पशुपति नाथ का अर्थ है पशु नाम आत्मा का है सर्व आत्माओं के स्वामी सर्वान्तर्यामी भगवान भोले नाथ को पूजा ही विशेष फल देने वाली है तथा मनोकामना पूर्ण करती है।

शिव चालीसा

शिव पुराण के अनुसार शिव-शक्ति का संयोग ही परमात्मा है। शिव की जो पराशक्ति है उससे चित शक्ति प्रकट होती है। चित शक्ति से आनंद शक्ति का प्रादुर्भाव होता है, आनंद शक्ति से इच्छाशक्ति का उद्भव हुआ है। ऐसे आनंद की अनुभूति दिलाने वाले भगवान भोलेनाथ का शिवरात्रि में शिव चालीसा पढ़ने का अलग ही महत्व है। शिव चालीसा के माध्यम से अपने सारे दुखों को भूला कर शिव की अपार कृपा प्राप्त कर सकते हैं।

।।दोहा।।
श्री गणेश गिरिजा सुवन, मंगल मूल सुजान।
कहत अयोध्यादास तुम, देहु अभय वरदान।।

जय गिरिजा पति दीन दयाला। सदा करत सन्तन प्रतिपाला।।
भाल चन्द्रमा सोहत नीके। कानन कुण्डल नागफनी के।।
अंग गौर शिर गंग बहाये। मुण्डमाल तन छार लगाये।।
वस्त्र खाल बाघम्बर सोहे। छवि को देख नाग मुनि मोहे।।
मैना मातु की ह्वै दुलारी। बाम अंग सोहत छवि न्यारी।।
कर त्रिशूल सोहत छवि भारी। करत सदा शत्रुन क्षयकारी।।
नन्दि गणेश सोहै तहँ कैसे। सागर मध्य कमल हैं जैसे।।
कार्तिक श्याम और गणराऊँ या छवि को कहि जात न काऊ।।
देवन जबहीं जाय पुकारा। तब ही दुख प्रभु आप निवारा।।
किया उपद्रव तारक भारी। देवन सब मिलि तुमहिं जुहारी।।
तुरत षडानन आप पठायउ। लवनिमेष महँ मारि गिरायउ।।
आप जलंधर असुर संहारा। सुयश तुम्हार विदित संसारा।।
त्रिपुरासुर सन युद्ध मचाई। सबहिं कृपा कर लीन बचाई।।
किया तपहिं भागीरथ भारी। पुरब प्रतिज्ञा तसु पुरारी।।
दानिन महं तुम सम कोउ नाहीं। सेवक स्तुति करत सदाहीं।।
वेद नाम महिमा तव गाई। अकथ अनादि भेद नहिं पाई।।
प्रगट उदधि मंथन में ज्वाला। जरे सुरासुर भये विहाला।।
कीन्ह दया तहँ करी सहाई। नीलकण्ठ तब नाम कहाई।।
पूजन रामचंद्र जब कीन्हा। जीत के लंक विभीषण दीन्हा।।
सहस कमल में हो रहे धारी। कीन्ह परीक्षा तबहिं पुरारी।।
एक कमल प्रभु राखेउ जोई। कमल नयन पूजन चहं सोई।।
कठिन भक्ति देखी प्रभु शंकर। भये प्रसन्न दिए इच्छित वर।।
जय जय जय अनंत अविनाशी। करत कृपा सब के घटवासी।।
दुष्ट सकल नित मोहि सतावै । भ्रमत रहे मोहि चैन न आवै।।
त्राहि त्राहि मैं नाथ पुकारो। यहि अवसर मोहि आन उबारा।।
लै त्रिशूल शत्रुन को मारो। संकट से मोहि आन उबारो।।
मातु पिता भ्राता सब कोई। संकट में पूछत नहिं कोई।।
स्वामी एक है आस तुम्हारी। आय हरहु अब संकट भारी।।
धन निर्धन को देत सदाहीं। जो कोई जांचे वो फल पाहीं।।
अस्तुति केहि विधि करौं तुम्हारी। क्षमहु नाथ अब चूक हमारी।।
शंकर हो संकट के नाशन। मंगल कारण विघ्न विनाशन।।
योगी यति मुनि ध्यान लगावैं। नारद शारद शीश नवावैं।।
नमो नमो जय नमो शिवाय। सुर ब्रह्मादिक पार न पाय।।
जो यह पाठ करे मन लाई। ता पार होत है शम्भु सहाई।।
धनिया जो कोई हो अधिकारी। पाठ करे सो पावन हारी।।
पुत्र हीन कर इच्छा कोई। निश्चय शिव प्रसाद तेहि होई।।
पण्डित त्रयोदशी को लावे। ध्यान पूर्वक होम करावे।।
त्रयोदशी व्रत करे हमेशा। तन नहीं ताके रहे कलेशा।।
धूप दीप नैवे। चढ़ावे। शंकर सम्मुख पाठ सुनावे।।
जन्म जन्म के पाप नसावे। अन्तवास शिवपुर में पावे।।
कहे अयोध्या आस तुम्हारी। जानि सकल दुःख हरहु हमारी।।

।।दोहा।।
नित्त नेम कर प्रातः ही, पाठ करों चालीसा।
तुम मेरी मनोकामना, पूर्ण करो जगदीश।।
मगसर छठि हेमन्त ऋतु, संवत चौसठ जान।
अस्तुति चालीसा शिवहि, पूर्ण कीन कल्याण।।

शिव जी की आरती

ऊँ जय शिव ओंकारा, ऊँ जय शिव ओंकारा।
ब्रह्मा, विष्णु , सदाशिव, अर्द्धांगी धारा।। ऊँ जय...
एकानन, चतुरानन, पंचानन राजे।
हंसानन, गरुड़ासन, वृषवाहन साजे।। ऊँ जय...
दो भुज चार चतुर्भुज, दस भुज अति सोहे।
तीनों रुप निरखता, त्रिभुवन जन मोहे।। ऊँ जय...
अक्षमाला वनमाला, रुण्डमाला धारी।
चन्दन मृग मद सोहे , भोले शुभकारी।। ऊँ जय...
श्वेताम्बर, पीताम्बर, बाघम्बर अंगे।
सनकादिक, ब्रह्मादिक, भूतादिक संगे।। ऊँ जय...
कर मध्ये कमंडल चक्र त्रिशूल धरता।
जग करता दुख हरता, जग पालन करता।। ऊँ जय...
ब्रह्मा, विष्णु सदाशिव, जानत अविवेका।
प्रणवाक्षर के मध्य, ये तीनों एका।। ऊँ जय...
त्रिगुण स्वामी जी की आरती जो कोई नर गावे।
कहत शिवानन्द स्वामी, मन वांछित पफल पावै।। ऊँ जय...

हरि ऊँ तत्सत्

शिवरात्रि के फायकू

डॉ. अनिल शर्मा 'अनिल'

धामपुर

१
फाल्गुन कृष्ण त्रयोदशी तिथि
रात्रि बनी महाशिवरात्रि
तुम्हारे लिए

२
करने को शिव जलाभिषेक
पैदल चलें यात्री
तुम्हारे लिए

३
भक्त, श्रद्धालु, पैदल चले
कांवड़ उठाए हुए
तुम्हारे लिए

४
चल रहे रात दिन
जयकारा लगाए हुए
तुम्हारे लिए

५
जय शिव शंकर शंभू
बम बम भोले
तुम्हारे लिए

६
हर हर महादेव की
सब जय बोले
तुम्हारे लिए

७
सज रहे शिवालय सारे
गूंज रहे जयकारे
तुम्हारे लिए

८
सबको दो प्रभु शक्ति
रहे करते भक्ति
तुम्हारे लिए

९
पूजन, वंदन, भजन,कीर्तन
शिवालयों में आराधन
तुम्हारे लिए

१०
देते मन चाहा वर
जब होते प्रसन्न
तुम्हारे लिए

११
बेल पत्र, धतूरा फल
संग चढ़ाएं गंगाजल
तुम्हारे लिए

१२
भोले बाबा सहज सरल,
करते समस्याएं हल
तुम्हारे लिए

१३
जय हे महादेव, त्रिपुरारी
नतमस्तक नर नारी
तुम्हारे लिए

मनीषी सिन्हा

गाजियाबाद

१
शिवरात्रि की बेला पावन
युगल रूप सुहावन
तुम्हारे लिए

२
प्रकृति में वासंतिक उल्लास
शिवशक्ति का मिलन
तुम्हारे लिए

३
आदि अनादि योगेश्वर शिव
आस्था श्रद्धा दीप
तुम्हारे लिए

४
परम ज्ञान आधार है
सत्यम शिवम सुंदरम
तुम्हारे लिए

५
नित करें शिव साधना
पूर्ण हों मनोकामना
तुम्हारे लिए

६
शीघ्र हो जाते प्रसन्न
शिवशंकर भोले दानी
तुम्हारे लिए

७
विष को धारण किया
शिव नीलकंठ कहलाए
तुम्हारे लिए

८
अंतर्यामी शिव सब जाने
क्या है कल्याणकारी
तुम्हारे लिए

९
शिवत्व को ग्रहण करो
मुक्ति का मार्ग
तुम्हारे लिए

१०
गौरीशंकर सा बंधन हो
शिवरात्रि का संदेश
तुम्हारे लिए

११

महादेव का ध्यान धरो
भक्ति ही शक्ति
तुम्हारे लिए

१२
दूध, बेलपत्र, भांग, धतूरा
लेकर आए शिव
तुम्हारे लिए

१३
धर्ममय आचरण हो जब
देते शिव वरदान
तुम्हारे लिए

१४
सामंजस्य के स्वामी शिव
सहस्तित्व है भला
तुम्हारे लिए

१५
कालों के काल महाकाल
रक्षा करते सबकी
तुम्हारे लिए

१६
गृहस्थाश्रम वैराग्य का संतुलन
शिव ने सिखाया
तुम्हारे लिए

१७
नाम भजो सुमिरन करो
आ जाएँगे शिव
तुम्हारे लिए

१८
बम भोले के नारे
मंदिरों में जयकारे
तुम्हारे लिए

१९
शिव तुम्हारे रूप अनेक
भजन, गीत, कीर्तन
तुम्हारे लिए

२०
आशीष प्रदान करना शिव
लिखे मैंने फायकू
तुम्हारे लिए

डॉ. पूनम चौहान

एसबीडी महिला महाविद्यालय
धामपुर बिजनौर उत्तर प्रदेश

१
शिव आदि, शिव अनंत
शिव ब्रह्म, ब्रह्मांड
तुम्हारे लिए
२
भस्मधारी शिव, औघड़, दानी
ध्यान मग्न सर्वदा
तुम्हारे लिए
३
शक्तिपीठ, ज्योतिर्लिंग और चारो धाम
अखण्डता एकता बने
तुम्हारे लिए
४
बेलपत्र, पुष्प, भांग, धतूरा
नैवेद्य समर्पित आशुतोष
तुम्हारे लिए
५
एक मंत्र जपना सदा
ओम नमः शिवाय
तुम्हारे लिए
६
तपस्चारी, त्रिपुंडधारी, है त्रिपुरारी
त्रिलोकी नमन सर्वदा
तुम्हारे लिए
७
शिवभक्ति में लीन रहो
करेंगें शिव कल्याण
तुम्हारे लिए
८
शिव कर्ता, शिव हर्ता
शिव ही पालनहार
तुम्हारे लिए
९
शिव विवाह अद्भुत अपूर्व
चकित सदा संसार
तुम्हारे लिए
१०
चन्द्रमौलि शिव नीलकंठ, सर्पमाल
कालों के महाकाल
तुम्हारे लिए
११
अविनाशी ब्रह्म सत्य परम
शिव भक्ति पावन
तुम्हारे लिए
१२
कैलाश शिखर, पुण्य धरा
शिव शक्ति विराजे
तुम्हारे लिए

अल्पना जैन

धामपुर, उत्तर प्रदेश

१.
जपूं नित शिव नाम
चढ़ाऊ भांग धतूरा
तुम्हारे लिए
२
गूंजे बम बम नाद
वातावरण सारा शिवमय
तुम्हारे लिए
३
रंगू भक्ति मे तुम्हारी
जपूं शिव नाम
तुम्हारे लिए
४
गले सर्पो की माला
शीश गंगा विराजे
तुम्हारे लिए
५
सत्यम शिवं सुंदरम रूप
बाघम्बर अंग सोहे
तुम्हारे लिए
६
सर्व जन कल्याण हित
किया विष पान
तुम्हारे लिए
७
शिव शक्ति संग विराजे
रचूं शिव फायकू
तुम्हारे लिए

सीता त्रिवेदी

जलालाबाद शाहजहांपुर

१
आईं महाशिवरात्रि घर में
खुशियां अपार सुख
तुम्हारे लिए
२
भगवान शंकर मां पार्वती
का दिव्य मिलन
तुम्हारे लिए
३
जय जय शिव शंकर
जय बम भोले
तुम्हारे लिए
४
शीश पर गंगा बिराजे
गले भुजंग माला
तुम्हारे लिए
५
शिव कैलाश के वासी
सबकी हरते विपदा
तुम्हारे लिए
६
देते सबको अभयदान शिव
ओम नमः शिवाय
तुम्हारे लिए
७
पल भर में खुश
होते मेरे भंडारी
तुम्हारे लिए
८
सबका सदा करें कल्याण
अविनाशी कृपा निधान
तुम्हारे लिए
९
भोले त्रिपुरारी सबकी सुनते
पूर्ण करते अभिलाषा
तुम्हारे लिए
१०
अंग भस्म रामाये नन्दी
संग मां पार्वती
तुम्हारे लिए
११
शिव शरण में आए
त्रिशूल डमरू मृगछाला
तुम्हारे लिए
१२
सारे संकट हरते पल
भर में सभी
तुम्हारे लिए
१३
बेलपत्र धतूरा भांग अर्पण
करूं कृपा निधान
तुम्हारे लिए
१४
मेरी विपदा हरो सद्बुद्धि
दो हे भोलेनाथ
तुम्हारे लिए

सुनीता चक्रपाणि

काशीपुर उत्तराखंड।

१
शिव बम बम भोले
शिवरात्रि में बोले
तुम्हारे लिए

२
गौरा को ब्याहने चले
भंगिया उतारी गले
तुम्हारे लिए

२
दूल्हा बने भोले भंडारी
लिए नंदी सवारी
तुम्हारे लिए

३
गले सर्पों की माला
पहनी है मृगछाला
तुम्हारे लिए

४
संग संग बाराती चले
पालकी सजाते चले
तुम्हारे लिए

५
विष्णु ब्रह्मा साथ आए
वेद पुराण लाए
तुम्हारे लिए

६
ब्रह्मा ने बजाया शंख
भभूति शिव अंग
तुम्हारे लिए

७
भूत, प्रेत, सर्प, मतवाले
बजाते ढोल नगाड़े
तुम्हारे लिए

८
शिवरात्रि के शुभ क्षण
विवाह हुआ संपन्न
तुम्हारे लिए

९
शिव गौरा छवि न्यारी
देखे दुनिया सारी
तुम्हारे लिए

१०
लाई हूं कुछ फायकू
मेरे भोले नाथ
तुम्हारे लिए

११
करना इन्हें तुम स्वीकार
मेरी पूजा समझ
तुम्हारे लिए

१२
शब्दों की बनाकर माला
लाई भोले बाबा
तुम्हारे लिए

१३
भावों से सजाकर फायकू
लगाऊं तोहे भोग
तुम्हारे लिए

१४
नैनो की अखंड ज्योत
प्रेम से ओतप्रोत
तुम्हारे लिए

१५
जपती रहूं, भूलूं ना
सदा तेरा नाम
तुम्हारे लिए

१६
तुमने मुझे सब दिया
करती रहूं धन्यवाद
तुम्हारे लिए

१७
एक दृष्टि मेरी ओर
बनाए रखना त्रिनेत्रधारी
तुम्हारे लिए

१८
बैठ श्रद्धा भक्ति से
धरूं ध्यान तेरा
तुम्हारे लिए

१९
मैं मूर्ख, जानूं ना
तेरी पूजन विधि
तुम्हारे लिए

२०
प्रेम से नवाऊं शीश
द्वार पर तेरे
तुम्हारे लिए

रंजना हरित

बिजनौर, उत्तर प्रदेश

१
फागुन मास कृष्ण पक्ष
चतुर्दशी है तिथि
तुम्हारे लिए

२
देवों के देव महादेव
सब कुछ अर्पण
तुम्हारे लिए

३
ओम नमः शिवाय जपू
और करूँ ध्यान
तुम्हारे लिए

४
बेलपत्र पुष्प फल करूँ
वृक्षों पर अर्पण
तुम्हारे लिए

५
बने दूल्हा भोले भंडारी
भूत प्रेत बाराती
तुम्हारे लिए

६
सोलह सोमवार व्रत पूजन
पाएं इच्छित वरदान
तुम्हारे लिए

७
सत्यम् शिवम सुन्दरम् अति
मनभावन है संसार
तुम्हारे लिए

८
गुड्डी गुड़िया हाथी घोड़े
सजायी है कावड़
तुम्हारे लिए

९
काँधे कांवड़ पांव घुंघरू
छम छम दौड़े
तुम्हारे लिए

१०
तिहू लोक में महिमा
गाते रहे गुणगान
तुम्हारे लिए

११
शिव पार्वती गणेश कार्तिकी
सब है आज्ञाकारी
तुम्हारे लिए

१२
बोले भोले का जयकारा
नीलकंठ नाम प्यारा
तुम्हारे लिए

१३
स्वरचित मौलिक शिव फायकू
लिख वन्दन करूँ
तुम्हारे लिए

आलोक त्यागी

१
बम बम भोले जयकारा
लगता बहुत प्यारा
तुम्हारे लिए

२
भोले की जय कहकर
गंगा जल भरते
तुम्हारे लिए

३
अंधेरे, बारिश में चलते
बम भोले करते
तुम्हारे लिए

४
भोले भोले जपते रहो
संकट दूर करेंगे
तुम्हारे लिए

५
रुमाल, खिलौने, साड़ी, जल
सजाई है कांवड़
तुम्हारे लिए

६
स्नान विश्राम भोजन निशुल्क
लगे हैं शिविर
तुम्हारे लिए

लक्ष्मी सिंह

जलालाबाद शाहजहांपुर

१
हे शिवशंकर हे त्रिपुरारी
ये फायकू समर्पित
तुम्हारे लिए

२
सिर पर चंद्र सजे
जटा-जूट गंग
तुम्हारे लिए

३
गले में व्याल माल
तन भभूत रमे
तुम्हारे लिए

४
डम डम डमरू बाजे
और हाथ त्रिशूल
तुम्हारे लिए

५
वाघाम्बर तन पर सजे
करें नन्दी सवारी
तुम्हारे लिए

६
हलाहल विष धारण कर
शिव कहलाए नीलकंठ
तुम्हारे लिए

७
है पाप का महाकाल
त्रिनेत्र और तांडव
तुम्हारे लिए

८
परिणय बंधन में बंधे
गौरी संग भोले

तुम्हारे लिए

९
गौरी, गणेश, कार्तिकेय संग
विराजे कैलाश में
तुम्हारे लिए

१०
ओम नमः शिवाय का
पावन मंत्र जाप
तुम्हारे लिए

११
हे महेश ये जीवन
करूं मैं अर्पण
तुम्हारे लिए

१२
हे आदिदेव, आशुतोष, महादेव
आयी चरणों में
तुम्हारे लिए

१३
अर्पित पुष्प बेल पत्र
करूं मैं दुग्धाभिषेक
तुम्हारे लिए

१४
आया महाशिवरात्रि का पर्व
रखूं मैं उपवास
तुम्हारे लिए

१५
है शिवशक्ति का लगन
नाचूं होके मगन
तुम्हारे लिए

मुक्ति बत्रा

इंदिरापुरम गाजियाबाद

१
चेतना के अंतर्यामी शिव
सर्वव्यापी सत्य शिव
तुम्हारे लिए

२
गले सर्पमाला जटा गंगा
माथे शोभित अर्धचंदा
तुम्हारे लिए

३
शिव संहारक रौद्र रूप
तांडव करते संघार
तुम्हारे लिए

४
भगवान शिव का जलाभिषेक
भक्त करते उपवास
तुम्हारे लिए

५
महाशिवरात्रि का पावन त्यौहार
पूजा उत्सव सामान
तुम्हारे लिए

६
ओम नमः शिवाय जाप
मिटा देता पाप
तुम्हारे लिए

७
समस्त पापों का विनाश
करते भोला भंडारी
तुम्हारे लिए

८
शिवरात्रि का व्रत पावन
रखती दुनिया सारी
तुम्हारे लिए

९
आदि अनंत है महाशिव
जग के कल्याणकारी
तुम्हारे लिए

१०
विष धारण तुमने किया
देवों के महादेव
तुम्हारे लिए

११
शिव से नाता जोड़ो
जीवन का उद्धार
तुम्हारे लिए

संतोष गर्ग 'तोषी'

पंचकूला

१.
कच्चा दूध, आक, धतूरा
करूं मैं पूजा
तुम्हारे लिए

२.
नमः शिवाय नमः शिवाय
शिव का मंत्र
तुम्हारे लिए

३.
गंगा जल, दही, पकौड़ी
लाई हूं मैं
तुम्हारे लिए

४.
रूद्राक्षों की माला बनाई
भक्ति भाव से
तुम्हारे लिए

५.
फूली- फूली नर्म पूरी
बम बम भोले
तुम्हारे लिए

६.
मेरे भोले डमरू वाले
गीत लिखे हैं
तुम्हारे लिए

७.
शिव जाप अति फलदाई
रटना सुबह- शाम
तुम्हारे लिए

८
शिव की शक्ति- भक्ति
खुशियों की बहार
तुम्हारे लिए

९
भोला भूखा भाव का
पीए जहर प्याला
तुम्हारे लिए

१०
खुली आधी बंद पलकें
मंद मंद मुस्काए
तुम्हारे लिए

११
नंदी पे चढ़ आए
डमरू बजाए
तुम्हारे लिए

१२
तन पर भस्म लगाए
सांपों को लिपटाए
तुम्हारे लिए

१३
शिव भजनों की माला
पुस्तक है छपवाई
तुम्हारे लिए

१४
शिव गौरी का प्रसाद
लेकर शीश धरो
तुम्हारे लिए

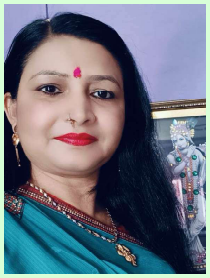

रचना शास्त्री

१
व्रत उपवास पूजा पाठ
सब करती नित
तुम्हारे लिए
२
धूप दीप जल नैवेद्य
लाई श्रद्धा सहित
तुम्हारे लिए
३
हे! शिव शंकर गौरीनाथ
ये जीवन दर्शन
तुम्हारे लिए
४
हे! कामारि, गंगाधर, महादेव
जपती मंत्र पंचाक्षर
तुम्हारे लिए
५
जगत्पति, अमर अजर अविनाशी
मेरी भक्ति अनुरक्ति
तुम्हारे लिए
६
सिद्ध रूप, हे! कालरूप
तन मन अर्पण
तुम्हारे लिए
७
भेद रहित मैं कामनाहीन
लिए खड़ी सर्वस्व
तुम्हारे लिए
८
आशुतोष, शशांक शेखर, चन्द्रमौलि
मन दर्शन अभिलाष
तुम्हारे लिए
९
हे! त्रिपुरारी भक्तन हितकारी
आई द्वारे नतमाथ
तुम्हारे लिए
१०
भव भय हारी मदनदहन!
मेरे श्रद्धा सुमन
तुम्हारे लिए

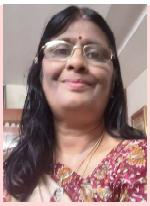

कनक पारख

विशाखापट्टनम
१
शिवरात्रि महत्वपूर्ण हिंदू त्यौहार
धूप, दीप, आरती
तुम्हारे लिए
२
महाशिवरात्रि का पर्व मनायें
शिव मंत्र उच्चारे
तुम्हारे लिए
३
फाल्गुन मास, कृष्ण पक्ष
शिव व्रत पूजा
तुम्हारे लिए
४
शिवरात्रि का आध्यात्मिक महत्त्व
विश्वास, आशा, शांति
तुम्हारे लिए
५
शिवरात्रि में शिव तांडव
नकारात्मक ऊर्जा दूर
तुम्हारे लिए
६
समुद्र मंथन, विष पिया
देवों के महादेव
तुम्हारे लिए
७
शिव लिंगम पर दूध
भांग, बेलपत्र, चंदन
तुम्हारे लिए
८
भगवान शिव पार्वती विवाह
भक्तों की भक्ति
तुम्हारे लिए
९
नीलकंठ नाम से प्रसिद्धि
कष्ट दूर करते
तुम्हारे लिए
१०
भोलेनाथ का अभिषेक करना
शुभ माना जाता
तुम्हारे लिए

मंजु त्यागी

नजीबाबाद
१
बम बम भोले करते
चलते हैं कावड़िया
तुम्हारे लिए
२
महाशिवरात्रि का पावन त्यौहार
मानते हैं हम
तुम्हारे लिए
३
मन में श्रद्धा लिए
लाये कांवड़ हम
तुम्हारे लिए
४
बेल पत्र धतूरा बेर
चढ़ाये श्रद्धा से
तुम्हारे लिए
५
बोल कबुलों से लाये
कांवड़ है हम
तुम्हारे लिए
६
भोले की कांवड़ उठा
चलते नंगे पांव
तुम्हारे लिए
७
चले कावड़िया गंगाजल लेकर
करे शिवलिंग अर्पण
तुम्हारे लिए
८
अभिलाषा थी कांवड़िया बनूं
हुई मुराद पूरी
तुम्हारे लिए
९
डाक कांवड़ की महिमा
बड़ी निराली है
तुम्हारे लिए
१०
राह में कितनी बाधा
रक्षक बने बाबा
तुम्हारे लिए

सत्येन्द्र शर्मा 'तरंग'

देहरादून।

१
हे! शिवशंकर गौरीपति देवाधिदेव
फायकू लिखते महादेव
तुम्हारे लिए

२
नमन तुम्हें करते जटाधारी
श्रद्धा सुमन त्रिपुरारी
तुम्हारे लिए

३
शिव! पूजा तुम्हारी सुखकारी
नतमस्तक नर नारी
तुम्हारे लिए

४
हे! जगत नियन्ता त्रिलोकेश
करते हम जलाभिषेक
तुम्हारे लिए

५
महेश्वर! दीपक घी जलाते
शिवलिंग दुग्ध चढ़ाते
तुम्हारे लिए

६
बेलपत्र चढ़ाने भूप भिखारी
आते शरण तिहारी
तुम्हारे लिए

७
दुखहर्ता भयहर्ता हे भोलेनाथ!
हम जोड़ें हाथ
तुम्हारे लिए

८
कैलाशी! भक्तवत्सल! तुम पालक
शीश नवाते बालक
तुम्हारे लिए

९
जपे हृदय अरु काय
ओम् नमः शिवाय
तुम्हारे लिए

१०
हे गौरीशंकर! हे आशुतोष!
समर्पित निज कोष
तुम्हारे लिए

११
हे भोलेशंकर! भक्त-धर्म
हो सकल कर्म
तुम्हारे लिए

१२
विष पीकर किया उपकार
भोले! जयकारा बारम्बार
तुम्हारे लिए

१३
जगत-हित गरल पिये
नीलकंठ! श्रद्धा हिये
तुम्हारे लिए

१४
डमरू वाले बाबा अविनाशी
आयेंगे हम काशी
तुम्हारे लिए

१५
हे भोले शंकर कैलाशपति!
मेरी जीवन-गति
तुम्हारे लिए

पंडित राकेश मालवीय मुस्कान

प्रयागराज

१
हे! भोले शिव शंकर
लाया हूँ पुष्पादि
तुम्हारे लिए

२
महा मृत्युंजय के जाप
से खिलता मन
तुम्हारे लिए

३
गणेश, पार्वती और कार्तिकेय
आनन्दित हैं आज
तुम्हारे लिए

४
महा शिवरात्रि का पर्व
गुंजायमान हो रहा
तुम्हारे लिए

५
शिव विवाह के गीत
दुनिया गा रही
तुम्हारे लिए

६
भाँग, धतूरा, बेलपत्र बालियाँ
अर्पित होंगी आज
तुम्हारे लिए

७
स्त्री पुरुष, बच्चे, बूढ़े,
आए हैं द्वार
तुम्हारे लिए

८
भूत प्रेत मुण्डहीन काले
बने हैं बाराती
तुम्हारे लिए

९
वर माँगती हैं कन्याएँ
भोग लाई हैं
तुम्हारे लिए

१०
गंगा स्नान करके आई
गंगाजल चढ़ाने शिव
तुम्हारे लिए

११
गगन से वह चाँद
तारक पुष्प चढ़ाता
तुम्हारे लिए

१२
नन्दी भी बड़े तैयार
विवाह में जाएँगे
तुम्हारे लिए

१३
कवि के ये फायकू
अर्पित हैं शिवजी!
तुम्हारे लिए

अमिता शुक्ला

पुवायाँ, शाहजहाँपुर

१
जगत पिता शिव शंकर
जग करता जयकार
तुम्हारे लिए

२
आरत हर शिव सुखदायक
करता जप संसार
तुम्हारे लिए

३
हे अविनाशी कैलाश निवासी
आए तेरे धाम
तुम्हारे लिए

४
पार्वती पति नंदी स्वामी
शीश झुका महादेव
तुम्हारे लिए

५
भांग धतूरा बेलपत्र जल
दूध की धार
तुम्हारे लिए

६
गंगाधर कैलाशी भोले शम्भू
देते आशीर्वाद सदा
तुम्हारे लिए

७
शंकर हरते कष्ट सदा
महिमा अपरम्पार प्रभु
तुम्हारे लिए

८
भाव विनय नत शीश
हमारा भोले भंडारी
तुम्हारे लिए

९
शिव सुखकर्ता दुखहर्ता हैं
जागे आठों याम
तुम्हारे लिए

१०
अद्भुत रूप सजाया शम्भू
आए नंदी साथ
तुम्हारे लिए

११
श्मशान निवासी शिव अवढरदानी
खोले हैं भंडार
तुम्हारे लिए

१२
शिव शम्भू दया करो
शिव ही पालनहार
तुम्हारे लिए

आचार्य पंडित धर्मानंद त्रिपाठी गुरु

कायस्थ सराय, नगीना, बिजनौर

१
कल्याण नाम शिव शंकर
शिव पाप नाशक
तुम्हारे लिए

२
भय हारी नाशक रोग
सुभ कारक शिव
तुम्हारे लिए

३
अलख जगा धूनि रमा
शिव पीते विष
तुम्हारे लिए

४
हरने को सभी पीड़ाएं
नटराज बने शिव
तुम्हारे लिए

५
त्रिशूल घुमा बजा डमरू
ज्योति जगाते जाग्रति
तुम्हारे लिए

६
शत्रु मित्र साथ मिलाते
लगा दरवार शिव
तुम्हारे लिए

७
सिंह बैल सर्प मूषक
गौरा गणेश सवारी
तुम्हारे लिए

८
शिव दरवारी सर्प बैल
मूषक सिंह साथ
तुम्हारे लिए

९
शिखर हिमालय सर्वोच्च आसन
मार्ग पोष्टिक व्यायाम
तुम्हारे लिए

१०
शीतल उष्णता वर्फी दिनकर
उभध्य रूप प्रक्रति
तुम्हारे लिए

११
सौंप शरीर प्रकृति को
कर्तव्य समाधि धर्म
तुम्हारे लिए

रेणु बाला सिंह

गाजियाबाद-उत्तर प्रदेश

१
भोले बाबा है भंडारी
जग के त्रिपुरारी
तुम्हारे लिए

२
शुभ दिवस है आया
शिवरात्रि मंगलाचार लाया
तुम्हारे लिए

३
कृष्ण पक्ष की चतुर्दशी
शुक्रवार आठ फरवरी
तुम्हारे लिए

४
शिवरात्रि शुभ व्रत की
मंगल कामना करती
तुम्हारे लिए

५
शिवरात्रि व्रत जो करता
मनोकामना पूर्ण पाता
तुम्हारे लिए

६
अविवाहितों को व्रत फलता
शीघ्र योग बनता
तुम्हारे लिए

७
बेलपत्र धतूरा फल इत्यादि
जल दुग्ध दधि
तुम्हारे लिए

८
प्रभु शिव की पूजा
शिवलिंग की परिक्रमा
तुम्हारे लिए

९
बम बम भोले भंडारी
हरते संकट भारी
तुम्हारे लिए

१०
भाल त्रिशूल छाल चंद्रु
डम डम बाजे डमरू
तुम्हारे लिए

११
शिव और माता पार्वती
आई समर्पित तिथि
तुम्हारे लिए

डॉ. सारंगादेश 'असीम'

धामपुर/हरिद्वार
९४१२१२३३२१, ९८९७३८२१६०

१
तुभ्यम् नमामि गौरीपतये! हम
नतशिर करते वंदन
तुम्हारे लिए

२
हे चंद्रचूड़, गंगाधराय! हम
नित करते अभिनंदन
तुम्हारे लिए

३
गौरीशंकर, कार्तिकेय, गणेश को
आओ करें नमन
तुम्हारे लिए

४
फाल्गुन मास शिवरात्रि पर
हम करें शिवाराधन
तुम्हारे लिए

५
ष्हर हर महादेव ष्जयकारा
मिलकर बोले हम
तुम्हारे लिए

६
गंगा यमुना सरस्वती का
है अद्भुत संगम
तुम्हारे लिए

७
पीतवसन से भक्त सुशोभित
तन मन सुंदरतम
तुम्हारे लिए

८
विवाहपर्व पर शिवगौरा के
आओ करें भजन
तुम्हारे लिए

९
भांग चरस गांजा पीकर
मत करो हुड़दंग
तुम्हारे लिए

१०
अंटशंट भजन बजा कर
भोंडा करें नर्तन
तुम्हारे लिए

११
रूप बना गौरीशंकर का
धूम्रपान करते जन
तुम्हारे लिए

१२
देख अपमान सनातनधर्म का
मन करता क्रंदन
तुम्हारे लिए

१३
शांतमन गंगाजल-अर्पण से
होगा पाप शमन
तुम्हारे लिए

१४
शपथ उठाओ आज शिवभक्तों !
उत्तम बने सनातन
तुम्हारे लिए

१५
शिवरात्रि का व्रत धारणकर
पावन होगा मन
तुम्हारे लिए

१६
शिव दया रहे, शिव कृपा रहे
जग होगा वृंदावन
तुम्हारे लिए

नवनीता दुबे नूपुर

१
हे देवों के देव
भक्तो की आशा
तुम्हारे लिए
२
महादेव भोले भंडारी,नीलकंठ
करते हैं उपासना
तुम्हारे लिए
३
मन में तुम्हारी मूरत
साधना, मनन, अर्चन
तुम्हारे लिए
४
बेलपत्र, धतूरे, अकोना फूल
भस्म, पंचामृत अर्पित
तुम्हारे लिए
५
सकल विश्व भजता तुम्हें
समर्पित है जीवन
तुम्हारे लिए
६
माता गौरा अर्धांगिनी सती
चढ़ाऊं चुनरी, शृंगार
तुम्हारे लिए
७
शीश पर चंद्र विराजे
जटाओं से गंगा
तुम्हारे लिए
८
शुभ महाशिवरात्रि पर्व आया
भक्तों का उल्लास
तुम्हारे लिए
९
कालचक्र से रक्षा करो
पूजन थाली, आरती
तुम्हारे लिए
१०
हाथ जोड़ करते विनती
भक्तों की पुकार
तुम्हारे लिए

सरोज दुगङ 'सविता'

खारूपेटिया - असम

१
ओघङ दानी भस्म मसानी
लाई भंगिया घोट
तुम्हारे लिए
२
कैलाश पति शिव शंकर
शिवरात्री व्रत रखती
तुम्हारे लिए
३
गणंगोर पूजती सभी सुहागन
मांगे अमर सुहाग
तुम्हारे लिए
४
कांवङ लेकर चले कांवडिया
बोले 'बोल बम'
तुम्हारे लिए
५
काशी विश्वनाथ के दर्शन
आज हुई धन्य
तुम्हारे लिए
६
सोलह सोमवार कुंवारी कन्या
रखती निर्जला व्रत
तुम्हारे लिए
७
कहलाते तुम भोले भंडारी
पार्वती मनाकर हारी
तुम्हारे लिए
८
शिव की बारात सजी
भूत प्रेत बाराती
तुम्हारे लिए
९
गंगा धाट मुक्ति पायेंगे
इसी आस आते
तुम्हारे लिए
१०
महा शिवरात्री सजे मंदिर
दर्शन करने आते
तुम्हारे लिए

निकेता पाहुजा

रुद्रपुर उत्तराखंड

१
आदि योगी अनंत शिव
शिव सत्य विशाल
तुम्हारे लिए
२
शून्य की पराकाष्ठा का
शिव ही मिसाल
तुम्हारे लिए
३
जीवन की पटरी का
श्मशान सत्य अंत
तुम्हारे लिए
४
शिव अनंत सत्य है,
शिव ही आरम्भ
तुम्हारे लिए
५
शिव पार्वती और गणेश
कैलाश परम् प्रिय
तुम्हारे लिए
६
महाकाल शिव का रूप
शिव ही तांडव
तुम्हारे लिए
७
शिव ही नीलकंठ हैं
डमरू अति प्रिय
तुम्हरे लिए
८
अर्ध चंद्र मस्तक सोहे
बेलपत्र अति प्रिय
तुम्हारे लिए
९
नाग रूप हिय सोहे
भस्म तन रमाए
तुम्हारे लिए
१०
बम बम बोले जयकारा
शिव अनादि अनंत
तुम्हारे लिए

डॉ. प्रिया

अयोध्या

१
शिव-पार्वती के संग
भक्तों पर भक्तिरंग
तुम्हारे लिए
२
बेलपत्र, धतूरा, चंदन संग
पूजा की थाल
तुम्हारे लिए
३
शिव पुराण से हो रहा
जन मानस कल्याण
तुम्हारे लिए
४
काम, क्रोध, घृणा, लोभ
वासना से विरक्ति
तुम्हारे लिए
५
हर्ष, प्रेम, संतोष, प्रार्थना
क्षमा जैसे सद्भाव
तुम्हारे लिए
६
शुभ कार्यों की शुरुआत
गणेशजी के साथ
तुम्हारे लिए
७
गंगा जटाओं में प्रवाहित
तांडव कला समाहित
तुम्हारे लिए
८
ज्योतिर्लिंग काशी अति पावन
अमरनाथ यात्रा मनभावन
तुम्हारे लिए
९
बम बम भोले संग
ऊं का उच्चारण
तुम्हारे लिए
१०
सनातन संस्कृति अति मनभावन
शिवरात्रि पर्व पावन
तुम्हारे लिए

अनुजा दुबे 'पूजा'

१
लिखें हैं कुछ फायकू
मेरे भोले भंडारी
तुम्हारे लिए
२
लाए धतूरा जल आरती
करने को पूजन
तुम्हारे लिए
३
लगा रहें सब जयकारा
मनाने को तुमको
तुम्हारे लिए
४
सजने लगे हैं कांवरियाँ
चल पड़े कांवर
तुम्हारे लिए
५
खुश होते नर नारी
पहुंचकर तेरी चौखट
तुम्हारे लिए
६
तुम होते प्रसन्न जल्दी
कहते सब यही
तुम्हारे लिए
७
पूर्ण करो सबकी मनोकामना
रखा सबने व्रत
तुम्हारे लिए
८
कष्टों का करो संहार
आए शरण तुम्हारी
तुम्हारे लिए
९
मांगे तेरी भक्ति 'पूजा'
तुमसे ओ भोलेनाथ
तुम्हारे लिए
१०
भर दो झोली खाली
आए जो सवाली
तुम्हारे लिए

रश्मि अग्रवाल

नजीबाबाद
१
चक्र कमण्डल गले भुजंग
अंग वसन मृगछाला
तुम्हारे लिए
२
गौरी पति महेश हैं
दुःख में तारनहार
तुम्हारे लिए
३
बारह ज्योतिर्लिंगों में शम्भू
आदिशक्ति से अपरम्पार
तुम्हारे लिए
४
भांग, धतूरा, बेलपत्र ले
शिव मन्दिर जाना
तुम्हारे लिए
५
देवों के देव हैं
महारूद्र, विषधर, किरात
तुम्हारे लिए
६
पंचाश्री मंत्र से होता
उमापति का ध्यान
तुम्हारे लिए
७
सोमवार का व्रत करो
पुण्य मिले अगाध
तुम्हारे लिए
८
शिव अभिषेक अमोघ है
शक्ति इसमें अपार
तुम्हारे लिए
९
भोले के स्मरण से
भक्तों का उद्धार
तुम्हारे लिए

डॉ. वीना गर्ग

मुजफ्फरनगर
१
करती है कठोर तप
हिमालय की तनया
तुम्हारे लिए
२
देवों के देव शिव
आये हम मन्दिर
तुम्हारे लिए
३
बेलपत्र, पुष्प और धतूरा
लाये हैं हम
तुम्हारे लिए
४
आधार तुम जगत के
सब है सम्भव
तुम्हारे लिए
५
अर्पण हैं भाव मेरे
भोले शिव शंकर
तुम्हारे लिए
६
भूल नहीं जाना शिव
संसार व्याकुल है
तुम्हारे लिए
७
पूजा का थाल सजा
आई मैं मन्दिर
तुम्हारे लिए
८
हे मेरे भोले शिव
लाई मैं गंगाजल
तुम्हारे लिए
९
पार्वती के मन में
नेह घनेरा है
तुम्हारे लिए
१०
सर्पों की माला भी
बनती आभूषण है
तुम्हारे लिए

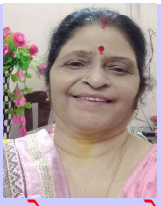

डॉ. रेखा सक्सेना

मुरादाबाद
१
शिव करुणा के अवतार
शक्ति की पतवार
तुम्हारे लिए
२
फाल्गुन मास कृष्ण पक्षे
चतुर्दशी में शिवविवाह
तुम्हारे लिए
३
वैराग्य छोड़ गृहस्थ अपनाया
सुखद संदेशात्मक जीवन
तुम्हारे लिए
४
शिव शक्ति मिलन उत्सव
महाशिवरात्रि व्रत रखें
तुम्हारे लिए
५
बेलपत्र पुष्प भांग धतूरा
चलो चढ़ाएं गंगाजल
तुम्हारे लिए
६
डम डम नाद करे
तब शिव डमरू
तुम्हारे लिए
७
शिवालयों में भक्त जन
करते पूजन वन्दन
तुम्हारे लिए
८
परम पूज्य द्वादश ज्योतिर्लिंग
भोले औघड़दानी के
तुम्हारे लिए
९
तारक मंत्र नमः शिवाय
हर हर महादेव
तुम्हारे लिए
१०
मानवता के लिए समर्पित
विषपायी वह नीलकंठ
तुम्हारे लिए

डॉ. पुष्पा सिंह

१
शिव करते सबका कल्याण
निराकार प्रतीक ज्योतिर्लिंग
तुम्हारे लिए
२
स्नेह प्रेम भरपूर भोलेनाथ
ज्ञान सागर बहाते
तुम्हारे लिए
३
सर्वोच्च सर्वोत्तम सर्व शक्तिमान
जनमानस करते कल्याण
तुम्हारे लिए
४
शिव शक्ति शिवजी सुंदर
सुख समृद्धि दायक
तुम्हारे लिए
५
जपते जो पंचाक्षरी मंत्र
कामना पूरी करते
तुम्हारे लिए
६
भक्ति स्तुति पूजन दर्शन
श्रद्धा पूरी करें
तुम्हारे लिए
७
फलफूल भांग धतूरा से
शिव होते प्रसन्न
तुम्हारे लिए
८
हरहर महादेव लगाते नारा
महादेव मंगल करते
तुम्हारे लिए
९
जटा से बहती धार
शिव है तारणहार
तुम्हारे लिए
१०
रोग दुख देते टाल
चमकाते सबके भाल
तुम्हारे लिए

सुनील श्रीवास्तव राज

गोरखपुर मो.९६५३०६७१६४

१
हे महेश त्रिपुरेश कलानिधि
आया तेरे द्वार
तुम्हारे लिए
२
बेलपत्र और भस्म लेकर
करूं तेरा शृंगार
तुम्हारे लिए
३
महाकाल का रूप अनुपम
होता जब संहार
तुम्हारे लिए
४
भवसागर से पार कराओ
करते भक्त पुकार
तुम्हारे लिए
५
महादेव जब तांडव करते
होता प्रलय अपार
तुम्हारे लिए
६
सिरपर किया जनहित धारण
गंगा की जलधार
तुम्हारे लिए
७
महाशिवरात्रि पर दर्शन का
सपना हो साकार
तुम्हारे लिए
८
नमः शिवाय दिव्य मंत्र
हम जपते बारम्बार
तुम्हारे लिए
९
तुम भोले हो गौरीशंकर
सब के पालनहार
तुम्हारे लिए
१०
हमसब मिल करते आराधन
सबका हो उद्धार
तुम्हारे लिए

डा. होशियार सिंह यादव

मोदीका, वार्ड नंबर ०१, कनीना-१२३०२७
जिला महेंद्रगढ़ हरियाणा (०९४१६३४८४००)

१
पूजा करता रात दिन
अर्पण करूं बेल
तुम्हारे लिए
२
कांवड़ अर्पित कर रहा
कष्ट सहूं हजार
तुम्हारे लिए
३
जीवन मिले इंसान का
करने को काज
तुम्हारे लिए
४
सांझ सवेरे मैं रटता
बस तेरा नाम
तुम्हारे लिए
५
खेला कूदा बड़ा हुआ
कष्ट सहे हजार
तुम्हारे लिए
६
गाजर, बेर, बेल चढाऊं
लाऊं जा बाजार
तुम्हारे लिए
७
शिव अर्पित दूध दही
बेल, धतूरा, भांग
तुम्हारे लिए
८
दर्शन खातिर जी रहा
अर्पण जीवन हजार
तुम्हारे लिए
९
गंगाजल भी अर्पित करूं
लेता तेरा नाम
तुम्हारे लिए
१०
नाम बड़ा है आपका
जीता इस जहान
तुम्हारे लिए

मैत्री मेहरोत्रा 'मैत्री'

१
शिव शंकर भोले त्रिपुरारी
हरेगें विपदा सारी
तुम्हारे लिए
२
शिव सुनते करुण पुकार
करते अनगिनत उपकार
तुम्हारे लिए
३
पंचाक्षर मंत्र सदा सहाय
ऊँ नमः शिवाय
तुम्हारे लिए
४
भांग धतूरा अक्षत चंदन
आशुतोष का वंदन
तुम्हारे लिए
५
जय कृपाल अनंत अविनाशी
धाम तुम्हारा काशी
तुम्हारे लिए
६
भक्तों को करें निहाल
शिव शंकर महाकाल
तुम्हारे लिए
७
मृगचर्म सजे शिव अंग
जटा में गंग
तुम्हारे लिए
८
श्मशान में धूनी रमाय
शिव महाकाल महाकाय
तुम्हारे लिए
९
पार्वती पति भोले भंडारी
महिमा अद्भुत न्यारी
तुम्हारे लिए
१०
सत्यम् शिवम् सुंदरम् मंत्र
जीवन का तंत्र
तुम्हारे लिए

विनोद शर्मा

धामपुर

१

जय जय बाबा भोलेनाथ
चरणकमल नत माथ
तुम्हारे लिए

२

नंदी की सवारी चढ़े
दूल्हा त्रिपुरारी बने
तुम्हारे लिए

३

अंग भस्म चंद्र भाल
पहने बारम्बर छाल
तुम्हारे लिए

४

बराती बने सभी देव
बैताल राक्षस अदेव
तुम्हारे लिए

५

पावन कांवर कांधे धारे
बोल रहे जयकारे
तुम्हारे लिए

६

कांवर यात्री जल धारे
श्रृद्धा सहित शिवद्वारे
तुम्हारे लिए

७

शिवालयों में भीड़ भारी
भक्तजन धीर धारी
तुम्हारे लिए

८

भांग धतूरा गंगाजल हाथ
बिल्वपत्र पुष्प साथ
तुम्हारे लिए

९

जल अभिषेक पुण्य भारी
सब विपदाएँ टारी
तुम्हारे लिए

१०

निर्गुण निराकार निर्विकल्प ओंकार
जगति करुण पुकार
तुम्हारे लिए

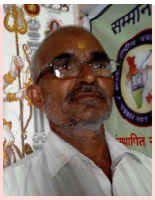

डॉ. भगवान प्रसाद

पत्रकार भवन, गंधियांव, करछना,
प्रयागराज, उ प्र २१२३०१

१

शिव की महिमा न्यारी
लगती सबको प्यारी
तुम्हारे लिए

२

मांग लूंगा शुभ आशीष
सदा कल्याण का
तुम्हारे लिए

३

शिव जी अवढर दानी
करेंगे शुभ शुभ
तुम्हारे लिए

४

हम सब करेंगे शिवार्चन
मंगल कामना करेंगे
तुम्हारे लिए

५

शिव ही सत्य है
मैं करूँगा वन्दना
तुम्हारे लिए

६

शाश्वत है शिव परिवार
आओ प्रार्थना करें
तुम्हारे लिए

७

हे प्रभु भोले भंडारी
कर रहा वन्दना
तुम्हारे लिए

८

आओ चलें शिव मंदिर
सादर शीश झुकाएं
तुम्हारे लिए

९

पार्वती वामांग में विराजें
शंकर जी के
तुम्हारे लिए

१०

भगवान शंकर विनती सुनिए
अपने भक्तों की
तुम्हारे लिए

सुमन बिष्ट

१

महाशिवरात्रि का पावन पर्व
शिवभक्त करते आराधना
तुम्हारे लिए

२

फागुन, कृष्णपक्ष चतुर्दशी को
करते व्रत, पूजन
तुम्हारे लिए

३

भांग, धतूरा, पुष्प, बेलपत्र
शिवलिंग पर अर्पित
तुम्हारे लिए

४

दूध, जल, तिल, अक्षत
भोले मैं लायी
तुम्हारे लिए

५

शिवालयों में भक्त करते
पूजा और जलाभिषेक
तुम्हारे लिए

६

शिव पार्वती का मिलन
महाशिवरात्रि का त्योहार
तुम्हारे लिए

७

द्वादश ज्योतिर्लिंग का प्रादुर्भाव
भक्त मनाते त्योहार
तुम्हारे लिए

८

तीर्थस्थलों का करते भ्रमण
हे शिव भोलेभण्डारी
तुम्हारे लिए

९

सारे कष्ट मिट जाते
भक्त जोत जलाते
तुम्हारे लिए

१०

भक्त ढोल मंजीरे बजाते
भजन आरती गाते
तुम्हारे लिए

शिवानी विनय सिंह

कृभको नगर पिपरोला, शाहजहांपुर
उत्तर प्रदेश- २४२००१

१

संपूर्ण विश्व शत्रु सम
मित्र हैं शिव
तुम्हारे लिए

२

दूषित हुए जीवन में
इत्र हैं शिव
तुम्हारे लिए

३

कलुष से परे सदैव
पवित्र हैं शिव
तुम्हारे लिए

४

क्यों अनुभूति अवसाद की
स्वर्णछत्र हैं शिव
तुम्हारे लिए

५

ना खोजो यत्र तत्र
सर्वत्र हैं शिव
तुम्हारे लिए

६

युगों की तृष्णा मिटाने
स्वाति नक्षत्र शिव
तुम्हारे लिए

७

संचय की चिंता व्यर्थ
एकत्र हैं शिव
तुम्हारे लिए

८

जग बैरी तो क्या
प्रेमपत्र हैं शिव
तुम्हारे लिए

९

विश्वास है दृढ़ अगर
श्वेतपत्र हैं शिव
तुम्हारे लिए

१०

सारे बंधनों से मुक्त
स्वतंत्र हैं शिव
तुम्हारे लिए

महेजबीन मेहमूद राजानी

गोंदिया महाराष्ट्र (९४२३४१५१९१)

१
आई महाशिवरात्रि उमड़ी भीड़
भक्तजन आरती गाएं
तुम्हारे लिए
२
शिवपूजन की थाली सजी
चंदन रोली बेलपत्र
तुम्हारे लिए
३
चहुं ओर भजन जगराता
महाप्रसाद बने निराला
तुम्हारे लिए
४
शिवरात्रि का व्रत रखें
शिवलिंग दूध चढ़ाएं
तुम्हारे लिए
५
हर हर महादेव नारे
हर मंदिर शिवाले
तुम्हारे लिए
६
शिव पार्वती का आशीर्वाद
हाथ जोड़ प्रार्थना
तुम्हारे लिए
७
शिव पार्वती विवाह खुशी
फाल्गुन चतुर्दशी तिथि
तुम्हारे लिए
८
शिव के दिव्य अवतरण
मंगल पर्व मनाए
तुम्हारे लिए
९
निकले कांवड़ यात्रा
बम भोले जयकारा
तुम्हारे लिए
१०
गणगौर पूजन, सुहाग सलामत
वर व्रत रखे
तुम्हारे लिए

मीना जैन

पेंसिलवेनिया

१
हरहर महादेव का नारा
दोहराए जग सारा
तुम्हारे लिए
२
गौरी शंकर की जोड़ी
त्रिभुवन से न्यारी
तुम्हारे लिए
३
शिवरात्रि पर्व, सात्विक आचरण
रमणियाँ गाएं मंगलाचरण
तुम्हारे लिए
४
भक्ति, स्तुति, पूजन, अर्चन
भाव भरा वंदन
तुम्हारे लिए
५
देवगण भी तुमको पूजते
श्रद्धा समर्पित करते
तुम्हारे लिए
६
मंदिर मंदिर शोभा न्यारी
छवि अति मनोहारी
तुम्हारे लिए
७
शिव सा कौन उपकारी
सबकी विपदा टारी
तुम्हारे लिए
८
शिव सुंदर, शिव सत्य
शिव महिमा अनंत
तुम्हारे लिए
९
शिव बसते संस्कारों में
श्रेष्ठतम विचारों में
तुम्हारे लिए
१०
शशिधर, गंगाधर, शिव, शंकर
कृपा करो अभयंकर!
तुम्हारे लिए

मीना दुगड़

कोलकाता

१
सत्य शिव सुंदर है
वही है कल्याणकारी
तुम्हारे लिए
२
शिव नाम है चमत्कारी
सुख शांति प्रदाता
तुम्हारे लिए ।
३
ओम नमः शिवाय मंत्र
लाई हूं मैं
तुम्हारे लिए
४
गले में नाग धारा
आभूषण किए विसर्जन
तुम्हारे लिए
५
लायी निश्छल प्रेम संदेश
शिव पार्वती जोड़ी
तुम्हारे लिए
६
पावन प्रेम का बंधन
है सुखद उदाहरण
तुम्हारे लिए ।
७
शिवनंदन भी है वृद्धिदायक
मोदक भोग लगाएं
तुम्हारे लिए
८
शिव पार्वती की जोड़ी
जग में मिसाल
तुम्हारे लिए
९
गाती, बजाती जाती तारकेश्वर
भक्तों की टोली
तुम्हारे लिए
१०
पुष्प, चंदन, बेलपत्र, दूध
से स्वर्णथाल सजाती
तुम्हारे लिए

साधना

दिल्ली

१
पतित पावनी मां गंगा
शीश पर धारी
तुम्हारे लिए
२
इंदुशेखर चरण वंदन नमन
दें शुभ आशीष
तुम्हारे लिए
३
त्रिजल कृपा बरसे सदा
नष्ट करें त्रयताप
तुम्हारे लिए
४
त्रिनयन भस्म करते हैं
काम मोह अहंकार
तुम्हारे लिए
५
गौरा, गणपति, कार्तिकेय नंदी
सहित शिव विराजे
तुम्हारे लिए
६
नीलकंठ धारते हैं विष
अमृत हैं लुटाते
तुम्हारे लिए
७
भोले शंकर हों प्रसन्न
श्रद्धा जल से
तुम्हारे लिए
८
करें काल से रक्षा
कालातीत हैं महाकाल
तुम्हारे लिए
९
वधः कर त्रिपुर का
कहलाए वो त्रिपुरारि
तुम्हारे लिए
१०
शीश शुभ हस्त रहे
महादेव करें कृपा
तुम्हारे लिए

संदीप कुमार शर्मा

नजीबाबाद (बिजनौर)

१

आओ मिलकर जयकारा लगाएं
बम बम भोले
तुम्हारे लिए

२

प्रेम भक्ति का संचार
शिवरात्रि का त्यौहार
तुम्हारे लिए

३

समस्त प्राणियों के स्वामी
सबका करते कल्याण
तुम्हारे लिए

४

शत्रुओं पर विजय पाएं
शिव रात्रि मनाएं
तुम्हारे लिए

५

रखते उपवास चढ़ाते जल
देवों के देव
तुम्हारे लिए

६

महाशिवरात्रि का पावन पर्व
उत्साह संग मनाएं
तुम्हारे लिए

७

महादेव का विवाह हुआ
देवी पार्वती संग
तुम्हारे लिए

८

माघ फाल्गुन कृष्ण पक्ष
महाशिवरात्रि का पर्व
तुम्हारे लिए

९

शिव रात्रि प्रमुख त्यौहार
शिव का पर्व
तुम्हारे लिए

१०

आई शिवरात्रि कांवड़ लाए
हर हर महादेव
तुम्हारे लिए

डॉ. पंकज कुमार

धामपुर, बिजनौर।

१

हे करुणाकर भोले शंकर
मुझे भी अपनालो
तुम्हारे लिए

२

आशुतोष हो आप तो
मैं हूँ अकिंचन
तुम्हारे लिए

३

अभ्यंकर हो आप तो
भय हरलो मेरे
तुम्हारे लिए

४

चन्द्रशेखर हो आप तो
दो थोड़ी चांदनी
तुम्हारे लिए

५

गङ्गाधर भी आप हो
थोड़ी शीतलता दो
तुम्हारे लिए

६

करुणावतार भी आप हो
थोड़ी करुणा दो
तुम्हारे लिए

७

हलाहल विष किया धारण
सृष्टि बचायी सारी
तुम्हारे लिए

८

अपने लिए ना रखा
सदैव दिया सबको
तुम्हारे लिए

९

आते हैं शरण सभी
दुखी जन संसारी
तुम्हारे लिए

१०

जगत के ताप हरते
चरणों से लगालो
तुम्हारे लिए

पवन कुमार सूरज

देहरादून

१

शिवरात्रि का पर्व आया
अमिट हर्ष लाया
तुम्हारे लिए

२

गलत कर्मो से उपवास
सुखद जीवन विकास
तुम्हारे लिए

३

रहना शिवभक्ति में लीन
अमृत पथ बेहतरीन
तुम्हारे लिए

४

खुश होकर शंकर भोले
अनुग्रह द्वार खोले
तुम्हारे लिए

५

आया दुर्लभ स्वर्णिम अवसर
कृपा बरसाते शिवशंकर
तुम्हारे लिए

६

बेलपत्र दूध मिश्रित जल
चढ़ाकर आएगा फल
तुम्हारे लिए

७

भक्तिभाव से करना पूजन
बरसाए कृपा पंचानन
तुम्हारे लिए

८

झाँक अपने मन मन्दिर
शिव बसते अंदर
तुम्हारे लिए

९

शिवजी नहीं लगाते देर
हरते जीवन फेर
तुम्हारे लिए

१०

शिवशंकर बेडा पार लगाए
'सूरज' कलयुग-उपाय
तुम्हारे लिए

संजय प्रधान

देहरादून

१

शिवरारात्रि पर लगेगा मेला
अनेकों चीजें आएंगी
तुम्हारे लिए

२

कर लो शिव पूजन
हमेशा होगा सुखकारी
तुम्हारे लिए

३

सजेगी सुंदर शिव बारात
निमंत्रण जरूरी नहीं
तुम्हारे लिए

४

शिव पूजन के लिए
मंगवाए बेल पत्री
तुम्हारे लिए

५

लोक कल्याण को शिव
कहलाए गए गंगाधर
तुम्हारे लिए

६

शिव का शांत रूप
अनोखा वरदान है
तुम्हारे लिए

७

शिव तो भोला है
मनाना आसान है
तुम्हारे लिए

८

शिव का सुंदर रूप
सर्वदा कल्याणकारी हैं
तुम्हारे लिए

९

पर्यावरण मित्र हैं शिव
सावन उदहारण है
तुम्हारे लिए

१०

नशा है विषपान समान
त्याग अच्छा रहेगा
तुम्हारे लिए

अक्षि त्यागी

१
शिव ही सत्य हैं
शिव समस्त संसार
तुम्हारे लिए
२
जटा में गंगा विराजे
गले में सर्पमाला
तुम्हारे लिए
३
अंत है अनंत हैं
शिव ही नाम
तुम्हारे लिए
४
नर हैं नारी हैं
अर्धनारीश्वर है नाम
तुम्हारे लिए
५
पतित हैं पावन हैं
हैं सर्व शक्तिमान
तुम्हारे लिए
६
आशा हैं निराशा हैं
शिव ही कैलाशा
तुम्हारे लिए
७
भोला हैं भंडारी हैं
सर्वदानी हैं बाबा
तुम्हारे लिए
८
विष नहीं विषधर हैं
महाकाल है नाम
तुम्हारे लिए
९
चलते नंदी संग हैं
पीते भांग प्याला
तुम्हारे लिए
१०
नैनों से करे जादू
मतवाली हैं आंखे
तुम्हारे लिए
११
पानी हो या विष
सब धारण शिव
तुम्हारे लिए
१२
एकानन चतुरानन पंचानन राजे
हंसासन गरूड़ासन वृषवाहन

तुम्हारे लिए
१३
नीलकंठ विष पीते हैं
शक्ति सदा संग
तुम्हारे लिए
१४
गंगा जटा में समाए
शिव शंभू शंकर
तुम्हारे लिए
१५
होता प्रलय का आगाज
खुलते त्रिनेत्र हैं
तुम्हारे लिए
१६
सुखकारी दुखहारी जगपालन कारी
कमंडलु चक्र त्रिशूलधारी
तुम्हारे लिए
१७
पार्वती अर्द्धांगी, शिवलहरी गंगा
चन्दा शीश विराजे
तुम्हारे लिए
१८
शांति, विनाश, समय, योग
ध्यान, नृत्य, प्रलय
तुम्हारे लिए
१९
भगवान शिव त्रिदेवों में
एक देव हैं
तुम्हारे लिए
२०
सृष्टि के संहारकर्ता और
जगतपिता है शिव
तुम्हारे लिए
२१
जय गणेश गिरिजा सुवन
मंगल मूल सुजान
तुम्हारे लिए
२२
भाल चन्द्रमा सोहत नीके
कानन कुण्डल नागफनी
तुम्हारे लिए

आभा मिश्रा

प्रयागराज उत्तर प्रदेश
१
हे नीलकंठ हे अविनाशी
किए हलाहल पान
तुम्हारे लिए
२
जटाशिश पर गंगा शोभित
बहती अमृत समान
तुम्हारे लिए
३
नाग वासुकी पहने माला
बिच्छू सोहे कान
तुम्हारे लिए
४
भस्म रमाए नंदी सवारी
अंग बाघाम्बर परिधान
तुम्हारे लिए
५
शशि शीश छवि निराली
कैसे करूं बखान
तुम्हारे लिए
६
कर त्रिशूल डमरू सोहे
करें राम ध्यान
तुम्हारे लिए
७
बायें गौरा बीच गणपति
कार्तिकेय है शक्तिमान
तुम्हारे लिए
८
भोला भंडारी भरते भंडार
मनचाहा दे वरदान
तुम्हारे लिए
९
महिमा उनकी कैसे गाएं
हैं करुणा निधान
तुम्हारे लिए

नवीन जैन अकेला

१
शिव भजन सार्थक करे
जीवन के आयाम
तुम्हारे लिए
२
शिव ही तो हनुमान है
है भोले बलवान
तुम्हारे लिए
३
शिव संग माँ पार्वती
सृष्टि का वरदान
तुम्हारे लिए
४
जहर पिया बने नीलकंठ
सहकर सारे ताप
तुम्हारे लिए
५
शिव नंदन श्री गणेश
रिद्धि- सिद्धी दातार
तुम्हारे लिए

शोभा सोनी

१
जय शिवभोले भंडारी बाबा,
करे जय घोष
तुम्हारे लिए
२
गाये गुणगान मिलकर
लगाये भोग हम
तुम्हारे लिए
३
आये शरण हम तेरी
दर्शन आस लिए
तुम्हारे लिए
४
हे गोरीश्वर, हे गंगाधर
सर्वस्व करे अर्पण
तुम्हारे लिए
५
त्रिशूलधारी गाये महिमा हम
सदा रखना कृपा दृष्टि
हमारे लिए

निर्मला जोशी 'निर्मल'

हलद्वानी, उत्तराखंड

१
शिव शंकर हे गंगाधर
गंगा जल लाई
तुम्हारे लिए

२
हे कैलाशी हे सुखराशि
चंदन वंदन अगरू
तुम्हारे लिए

३
शिव अनादि हैं अनंत
विश्व मंगल करें
तुम्हारे लिए

४
तुम्हारी ही जटाओं से
निकला गंगा जल
तुम्हारे लिए

५
बिल्वपत्र प्रिय है तुमको
समर्पित करने लाई
तुम्हारे लिए

६
शिव सत्य शिव अनंत
शिव अनादि भगवंत
तुम्हारे लिए

७
शिव ब्रह्म परमब्रह्म शिव
शिव काल महाकाल
तुम्हारे लिए

८
शिव शक्ति शिव भक्ति
करें जगत कल्याण
तुम्हारे लिए

९
परम दाता भोले शिव
हैं भोले भंडारी
तुम्हारे लिए

१०
शिव को लिख सकें
सामर्थ्य नहीं हमारी
तुम्हारे लिए

शिवरात्रि शुभ हो

कनक पारख

१
स्वयंभू प्रसन्न, कांवड़ यात्रा
बाधाएं दूर करें
तुम्हारे लिए

२
गंगा नदी पवित्र जल
लाते हैं कांवड़िए
तुम्हारे लिए

अक्षि त्यागी

१
मुण्डमाल तन क्षार लगाए
वस्त्र खाल बाघम्बार
तुम्हारे लिए

२
त्रिपुरासुर संग युद्ध मचाई
सबहिं की कृपा
तुम्हारे लिए

मंजू त्यागी

नजीबाबाद

१
आया फाल्गुन मास महीना
चले कांवड़ लेने
तुम्हारे लिए

२
भोले बाबा को अर्पण
गंगाजी का जल
तुम्हारे लिए

३
यात्रा तो खूब की
एक यात्रा कांवड़
तुम्हारे लिए

४
जीवन कितना सुखदाई
भोले बाबा करिश्माई
तुम्हारे लिए

५
कावड़िया बनकर हम चले
चले हम हरिद्वार
तुम्हारे लिए

६
वहीं कावड़िया सफल होता
जिसके हृदय शिव
तुम्हारे लिए

७
अपार आस्था और आत्मविश्वास
फिर नंगे पांव
तुम्हारे लिए

८
ना पूछो मेरी पहचान
मैं तो भस्मधारी
तुम्हारे लिए

९
एक लोटा जल धार
भोला करदे उद्धार
तुम्हारे लिए

१०
महाशिवरात्रि की हार्दिक शुभकामनाएं
हर हर महादेव
तुम्हारे लिए

विश्व महिला दिवस बनाम संदेशखाली

ऋषभदेव शर्मा

विश्व महिला दिवस (८ मार्च) पर आम तौर से दुनिया भर में महिलाओं के प्रति सम्मान, प्रशंसा और प्रेम प्रकट करते हुए उत्सव मनाने तथा उनकी आर्थिक, राजनीतिक और सामाजिक उपलब्धियों और कठिनाइयों पर चर्चा करने का रिवाज है। ऐसे में पश्चिम बंगाल के द्वीप संदेशखाली की महिलाओं की पीड़ा पर बात करना उत्सव के माहौल में खलल डालने जैसा भले ही लगे, अप्रासंगिक कतई नहीं है। भला इस दुर्भाग्यपूर्ण सच्चाई से आँखें कैसे चुराई जा सकती हैं कि आजकल भारतीय राजनीति में सबसे ज़्यादा सुर्खियाँ बटोर रहे द्वीप संदेशखाली पर कुछ दिन पहले महिलाओं की ओर से बड़े पैमाने पर शुरू हुए प्रदर्शन ने पूरे देश को झकझोर कर रख दिया था। ये महिलाएँ अपने हाथों में लाठी और झाड़ू लेकर सड़कों पर उतरी थीं और शाहजहाँ शेख़, शिबू हाजरा और उत्तम सरदार की गिरफ्तारी की माँग कर रही थीं। महिलाओं ने आरोप लगाया कि राज्य में सत्तारूढ़ तृणमूल कांग्रेस के ये तीन नेता और उनके सहयोगी लंबे समय से इलाके के लोगों पर अत्याचार कर रहे हैं। खेती की जमीन पर जबरन कब्जे के अलावा सबसे खतरनाक और शर्मनाक आरोप यह कि वे लंबे समय से संदेशखाली की अनेक स्त्रियों का यौन उत्पीड़न (सामूहिक दुष्कर्म!) करते आ रहे हैं। हद तो तब हो गई जब इन महिलाओं को न्याय दिलवाने के बजाय इनसे सबूत माँगे गए! राजनीति से लेकर प्रशासन तक की इस संवेदनहीनता और अकर्मण्यता की चाहे जितनी भी भर्त्सना की जाए, शायद नाकाफी होगी।

स्त्री की अस्मिता को सियासत का मोहरा नहीं बनाया जाना चाहिए न! लेकिन तब क्या किया जाए जब आरोपी दोषमुक्ति की हद तक शक्तिमान हो। भारतीय राजनीति की यह दलनिरपेक्ष क्रूर सच्चाई क्या किसी से छिपी है कि वोटों की बिसात पर यहाँ औरतों की प्रायः कोई कीमत नहीं है? अगर इससे पहले देश में अन्यत्र हुए मामलों में राजनीति ने आँख-कान बंद न रखे होते, तो संदेशखाली का सच देखने-सुनने में भी शायद उसे इतनी देर न लगी होती!

अस्तु, सामाजिक लांछन से लेकर जान जाने तक का खतरा उठाकर आखिर इन महिलाओं को द्वीप से - और घूँघट से भी - बाहर आना पड़ा। बताया गया है कि पश्चिम बंगाल के अपने हालिया दौरे के दौरान प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने संदेशखाली में तृणमूल कांग्रेस नेता शाहजहाँ शेख़ पर यौन उत्पीड़न का आरोप लगाने वाली पाँच महिलाओं से भी मुलाकात की। कैसी विडंबना है कि यह कारुणिक भेंट बारासात में आयोजित 'नारी शक्ति वंदन रैली' के अवसर पर हुई! सयाने बता रहे हैं कि जब इन पीड़िताओं ने प्रधानमंत्री के पैर छुए तो वे बोले कि वे उनके लिए दुर्गा हैं, जबकि पीड़िताओं ने उनसे अपील की कि 'हमारी रक्षा करें!' उम्मीद की जानी चाहिए कि इन दुर्गाओं की इस गुहार पर प्रधानमंत्री अवश्य कुछ ठोस कार्रवाई करेंगे। दरअसल यह समय भावुक भाषणों का नहीं, बल्कि स्त्री-सम्मान के लिए सचमुच कुछ कर दिखाने का है!

कहने-सुनने में यह खबर आश्वस्तिकर लगती है कि संदेशखाली की इन दुर्गाओं ने जब प्रधानमंत्री महोदय को बताया कि वे अपना संघर्ष जारी रखेंगी, तो उन्होंने कहा कि आप लोगों ने काफी लड़ाई लड़ ली और अब बस मुझ पर भरोसा रखिए। प्रधानमंत्री ने उन्हें भरोसा दिलाया है कि अब कोई उनकी तरफ उँगली भी नहीं उठा सकेगा। लेकिन अंतरराष्ट्रीय महिला दिवस का यक्ष-प्रश्न तो यह है कि, आखिर कब तक इस महादेश में महिलाएँ इस तरह पीड़ित होती रहेंगी? आखिर क्यों ऐसी नौबत आने दी जाती है कि कभी जंतरमंतर पर तो कभी इम्फाल में तो कभी संदेशखाली में भारत की बहन-बेटियों को महाभारत काल की द्रौपदी की तरह अपनी अस्मत और अस्मिता की रक्षा के लिए गुहार लगानी पड़ती है? आखिर क्यों?

खलनायक शाहजहां शेख

पश्चिम बंगाल में इन दिनों चर्चा में है। इस चर्चा का मुख्य कारण है शाहजहां शेख के काले कारनामे। टीएमसी नेता रहे शाहजहां शेख अचानक तब चर्चा में आया, जब ईडी उसके यहां छापा मारने पहुंची। ईडी टीम पर हमला हुआ और कई अफसर घायल हो गए। अचानक सैकड़ों महिलाएं सड़क पर उतरीं और इन महिलाओं ने शाहजहां शेख और उसके समर्थकों पर यौन शोषण के आरोप लगाए हैं। बंगाल का यह काण्ड अब लोकसभा चुनाव में मंचों से चर्चा का विषय बना है। रातों रात अमीर बने शाहजहां शेख के साम्राज्य की जांच शुरू हो गई है। बंगाल में भाई के रूप में पहचाने जाने वाला शाहजहां शेख संदेशखली विधानसभा क्षेत्र से चुनाव लड़ता था और एक तरफा जीत हांसिल करता था। ५ जनवरी को जब उसके आवास पर तलाशी लेने गई ईडी की एक टीम पर उसके समर्थकों ने हमला किया तभी से शाहजहां शेख का विकृत चेहरा कुख्यात के रूप में सामने आया। लगातार ५५ दिन तक दौड़ने के बाद, टीएमसी का यह कद्दावर नेता २९ फरवरी को गिरफ्तार कर ही लिया गया। बताया जाता है कि संदेशखाली का यह विलेन शाहजहां शेख ट्रेकर्स के हेल्पर के रूप में काम करता था। राजनीति से प्रेरित होकर वह वाम मोर्चे की रैलियों में भी जाने लगा तो जल्द ही सीपीआई के एक प्रधान का करीबी भी बन गया। वह राजनीतिक संरक्षण से बाहुबली बनता चला गया। बाद में वह टीएमसी में शामिल हो गया। २०१३ में सरबेरिया-अघराटी ग्राम पंचायत का उप-प्रधान बना। २०१९ विधानसभा चुनाव के बाद स्थानीय बीजेपी नेता प्रदीप मंडल की हत्या में भी शाहजहां शेख का नाम आया। उसके प्रभाव के चलते पुलिस ने अदालत में जो चार्जशीट दाखिल की, उससे शाहजहां शेख का नाम हटा दिया।

शाहजहां शेख पर आरोप है कि उसने लोगों की कृषि भूमि हड़पी और उस पर मत्स्य पालन शुरू किया। दबदबा बनाए रखने के लिए उसने २०० जवान लड़कों को ६,००० रुपये से १५,००० रुपये प्रति महीने काम पर रखा। ये युवा बाइक लेकर निकलते शाहजहां शेख के साथ स्टंट करते हुए चलते थे। उसके आदमियों का इतना खौफ था कि लोग उसकी मर्जी से ही मतदान करते थे। यही कारण है कि २०२३ में हुए बंगाल पंचायत चुनावों में शाहजहां शेख निर्विरोध जीत गया और टीएमसी का जिला परिषद सदस्य बन गया। टीएमसी ने उसे मत्स्य पालन विभाग की जिम्मेदारी दी और संदेशखली विधानसभा सीट का संयोजक और संदेशखली-I का ब्लॉक अध्यक्ष भी बनाया। यह उसका प्रभाव ही था कि २१ साल से टीएमसी के बरजामुर क्षेत्र के अध्यक्ष रहे हलधर अरी को २०१९ में हटा दिया गया था उनकी जगह शाहजहां के भाई सिराजुद्दीन को नियुक्त किया गया। चर्चा के अनुसार शाहजहां शेख अपनी अलग अदालत चलाता था। स्थानीय पुलिस भी शाहजहां शेख के हिसाब से ही काम करती थी। वह जमकर वसूली करता, और खूब अयाशी करता। २,००० शिकायतें शाहजहां शेख के खिलाफ मिली हैं।

ओपन डोर
खुले दिमाग के खुले विचार
राष्ट्रीय साप्ताहिक समाचार-पत्र

नियमित ग्राहक बनें

Title-Code-UPHIN49431/RNI-UPHIN/2021/79954/MSME-UDYAM-UP-17-0002703

समयावधि	रुपए डाक खर्च सहित	पीडीएफ/प्रिंट अंक	विशेषांक
वार्षिक	- १०००	४८	४
द्विवार्षिक	- १६००	९६	८
पंचवार्षिक	- ४५००	२४०	२०

रजि. पता- ए/7, आदर्श नगर, तातारपुर लालू, नजीबाबाद-246763 बिजनौर, उप्र संपादकीय कार्यालय- साईं एंक्लेव, निकट धनौरा देवता, नजीबाबाद-246763 बिजनौर, उप्र
Bank- INDIAN OVERSEAS BANK, Branch- NAJIBABAD AC- 368602000000245/ IFSC- IOBA0003686 PAN- AABAO7251R
Email- opendoornbd@gmail.com / Mob.- 9897742814

विज्ञापन दर निम्नवत है-

क्रम	विज्ञापन स्थान संपूर्ण पृष्ठ	मूल्य रुपए में	विज्ञापन स्थान आधा पृष्ठ	मूल्य रुपए	विज्ञापन स्थान चौथाई पृष्ठ	मूल्य रुपए
1	कवर पृष्ठ अंतिम (रंगीन)	26,000.00	कवर पृष्ठ अंतिम (रंगीन)	13,000.00	कवर पृष्ठ अंतिम (रंगीन)	7,000.00
2	कवर पृष्ठ २ या ३ (रंगीन)	22,000.00	कवर पृष्ठ २ या ३ (रंगीन)	11,000.00	कवर पृष्ठ २ या ३ (रंगीन)	6,000.00
3	आन्तरिक पृष्ठ (रंगीन)	20,000.00	आन्तरिक पृष्ठ (रंगीन)	10,000.00	आन्तरिक पृष्ठ (रंगीन)	5,000.00
4	श्वेत श्याम पृष्ठ	10,000.00	श्वेत श्याम पृष्ठ	5,000.00	श्वेत श्याम पृष्ठ	2,500.00

https://www.youtube.com/@OPENDOORNews
https://opendoornews.in

नियमित ग्राहक बनें

शोधादर्श
RNI UPHIN/2018/77444 ISSN 2582-1288
संदर्भित एवं समीक्षित शोध आलेखों की त्रैमासिक पत्रिका

RNI- UPHIN/2018/77444 ISSN 2582-1288

समयावधि	रुपए डाक खर्च सहित	पीडीएफ/प्रिंट अंक	विशेषांक
वार्षिक	- १०००	४	१
द्विवार्षिक	- १६००	८	२
पंचवार्षिक	- ४५००	२०	५

SHODHADARSH
Bank
Indian Overseas Bank,
Branch-Najibabad
AC- 368602000000186
IFSC- IOBA0003686

रजिस्टर्ड पता- ए/7, आदर्श नगर, तातारपुर लालू, नजीबाबाद-246763 बिजनौर, उप्र
संपादकीय कार्यालय- साईं एंक्लेव, निकट धनौरा देवता, नजीबाबाद-246763 बिजनौर, उप्र
Email- shodhadarsh2018@gmail.com Mob.- 9897742814

शोधादर्श में प्रकाशित विज्ञापन रेट

क्रम	विज्ञापन स्थान संपूर्ण पृष्ठ	मूल्य रुपए में	विज्ञापन स्थान आधा पृष्ठ	मूल्य रुपए	विज्ञापन स्थान चौथाई पृष्ठ	मूल्य रुपए
1	कवर पृष्ठ अंतिम (रंगीन)	26,000.00	कवर पृष्ठ अंतिम (रंगीन)	13,000.00	कवर पृष्ठ अंतिम (रंगीन)	7,000.00
2	कवर पृष्ठ २ या ३ (रंगीन)	22,000.00	कवर पृष्ठ २ या ३ (रंगीन)	11,000.00	कवर पृष्ठ २ या ३ (रंगीन)	6,000.00
3	आन्तरिक पृष्ठ (रंगीन)	20,000.00	आन्तरिक पृष्ठ (रंगीन)	10,000.00	आन्तरिक पृष्ठ (रंगीन)	5,000.00
4	श्वेत श्याम पृष्ठ	10,000.00	श्वेत श्याम पृष्ठ	5,000.00	श्वेत श्याम पृष्ठ	2,500.00

https://www.shodhadarsh.page

त्रैमासिक

RNI - UPHIN/2018/77444 ISSN 2582-1288

शोधादर्श

संदर्भित एवं समीक्षित शोध आलेखों की त्रैमासिक पत्रिका

SHODHADARSH

A Quarterly Peer Reviewed and Refereed Research Magazine

राष्ट्रवादी विचारों का 'शोधादर्श शोध संस्थान'

('शोधादर्श' पत्रिका द्वारा नियंत्रित)

राष्ट्रवादी विचारों के 'शोधादर्श शोध संस्थान' अभियान से जुड़ें और राष्ट्र के विकास में सहयोग करें

जुड़ने वाले लोग

- कोई भी, जो व्यसनी/अपराधी/ पागल न हो। सकारात्मक विचार वाला हो। किसी भी राजनीतिक अथवा अराजनीतिक संगठन से जुड़ा हो। कहीं भी कार्यरत हो। किसी भी धर्म और जाति का हो। रहता कहीं भी हो मगर भारतीय हो। किसी भी आयु का हो। अपने विचार लिखकर और बोलकर व्यक्त कर सकता हो। अनुशासन का पालन करने वाला हो। दूसरे के विचार सुनने वाला हो। राष्ट्र और समाज के प्रति किसी निर्णय पर पहुंचने वाला हो। सहयोग करने वाला हो, चुगलखोर और मजाक बनाने वाला न हो। शिक्षक, पत्रकार, चिकित्सक, वकील आदि कोई भी हो। कोई भी भाषा-भाषी हो सकता है। शिक्षित अथवा अशिक्षित हो। अनिवार्यतः 'शोधादर्श' पत्रिका की कम से कम वार्षिक सदस्यता प्राप्त की हो।

हमारे उद्देश्य

- राष्ट्र और राष्ट्र की समस्याओं पर विधिपूर्वक चर्चा की जाएगी। राष्ट्र को उन्नत बनाने के लिए विचार व्यक्त किए जाएंगे। शिक्षा और शोध पर विशेष ध्यान रहेगा। सरकार की नीतियों और उसमें सुधार पर चर्चा कर सरकार को अवगत कराया जाएगा।
- लगभग एक लाख पुस्तकों, पत्रिकाओं, रिपोर्ट आदि की पीडीएफ 'शोधादर्श' की वैबसाइट पर निशुल्क उपलब्ध कराने का प्रयास।

क्या नहीं होगा

- यह संस्था कोई देश विरोधी कार्य नहीं करेगी। यह संस्था देश में किसी भी प्रकार का द्वेष नहीं फैलाएगी।

आय

- उद्देश्यपूर्ति के लिए दान, चंदा, सहयोग आदि के रूप में धन स्वीकार किया जाएगा।

व्यय

- प्रचार, प्रसार, प्रकाशन, यातायात, आयोजन, मदद, सहयोग आदि पर व्यय किया जाएगा

पंजीकरण

- यह संस्थान त्रैमासिक पत्रिका 'शोधादर्श' का सहयोगी नॉन कॉमर्शियल संगठन (वैचारिक) होगा। इसलिए अलग से संगठन के रजिस्ट्रेशन की आवश्यकता नहीं है किन्तु भविष्य में जब भी संगठन को रजिस्टर्ड कराने की आवश्यकता होगी तब विधिपूर्वक नीति अपनाई जाएगी। फिलहाल संगठन में कोई स्थाई अध्यक्ष या पदाधिकारी नहीं होगा। जहां कहीं भी कोई कार्यक्रम कराया जाएगा वहां की अस्थाई कार्यकारी समिति बनाई जाएगी जो कार्यक्रम के तुरंत बाद भंग मान ली जाएगी।

'शोधादर्श' के अंग्रेजी संस्करण के लिए प्रयासरत हैं, संभवतः २०२४ में सफलता मिल जाए

https://www.shodhadarsh.page/ के अतिरिक्त एक और अन्य वैबसाइट पर काम चल रहा है, जिसमें शोध प्रवृत्ति को बढ़ाने संबंधी अनेक सुविधाएं होंगी

संपादक (शोधादर्श) सचलभाष – 9897742814 (वाट्सएप)

आपकी सदस्यता हमें बड़ा सहयोग प्रदान करेगी

वार्षिक सदस्यता : 1000 रु.   पांच वर्ष सदस्यता : 4500 रु.

भुगतान करें

SHODHADARSH

INDIAN OVERSEES BANK, NAJIBABAD AC- 368602000000186 IFSC- IOBA0003686

भुगतान पर्ची 9897742814 पर भेजें